Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ
وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :264)

अनुवाद: अच्छी बात कहना और माफ करनी बेहतरीन सदका है कि कोई तकलीफ इस के पीछे हो और अल्लाह बेनियाज़ तथा बुर्दबार है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 34

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

11 ज़विल हज्जा 1439 हिजरी कमरी 23 ज़हूर 1397 हिजरी शमसी 23 अगस्त 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

क़ानून दो हैं। एक वह क़ानून जो फ़रिश्तों के संबंध में है अर्थात यह कि वे केवल आज्ञापालन के लिए पैदा किए गए हैं । उनका आज्ञापालन करना मात्र प्रकाशमय स्वभाव की एक विशेषता है। वे पाप नहीं कर सकते परन्तु शुभ कर्मों में उन्नति भी नहीं कर सकते (2) दूसरा क़ानून वह है जो मनुष्यों से संबंधित है अर्थात यह कि मनुष्यों के स्वभाव में रखा गया है कि वे पाप कर सकते हैं पर शुभ कर्मों में उन्नति भी कर सकते हैं ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

और अपराधी लोग जो क्षमा याचना नहीं करते अर्थात ख़ुदा से शक्ति नहीं मांगते वे अपने अपराधों का दण्ड पाते रहते हैं। देखो आजकल प्लेग का प्रकोप भी धरती पर दण्ड स्वरूप आया है। ख़ुदा के समक्ष उद्दण्डी लोगों का उससे विनाश होता जाता है। फिर क्योंकर कहा जाए कि ख़ुदा का राज्य धरती पर नहीं। यह मत सोचो कि यदि धरती पर ख़ुदा का राज्य है तो लोग अपराध क्यों करते हैं ? क्योंकि अपराध भी ख़ुदा की नियति के विधान के अधीन है। यद्यपि वे लोग शरीअत के विधान से बाहर हो जाते हैं पर नियति के विधान से बाहर नहीं हो सकते। अत: यह कैसे कहा जा सकता है कि अपराधी लोग ख़ुदा के राज्य का जुआ अपनी गर्दन पर नहीं रखते। देखो इस देश ब्रिटिश इण्डिया में चोरियां भी होती हैं, ख़ून भी होते हैं, बलात्कारी, धरोहर हड़पने वाले और रिश्वत लेने वाले इत्यादि हर प्रकार के अपराधी पाए जाते हैं, पर यह नहीं कहा जा सकता कि इस देश में अंग्रेज़ी सरकार का राज्य नहीं। राज्य तो है पर सरकार ने जान बूझकर ऐसे कठोर कानून को उचित नहीं समझा जिसके भय से लोगों का जीवन कठिन हो जाए अन्यथा यदि सरकार समस्त अपराधियों को एक कष्टदायक जेल में रखकर उनको अपराधों से रोकना चाहे तो बहुत सुगमता से वे रुक सकते हैं या यदि कानून में कठोर दण्डों का प्रावधान हो तो इन अपराधों की रोकथाम हो सकती है। अत: तुम समझ सकते हो कि जितना मदिरापान इस देश में होता है, वैश्याओं की संख्या बढ़ती जाती है, चोरी डकैती और ख़ून की घटनाएँ होती हैं। यह इसलिए नहीं कि यहां अंग्रेज़ी सरकार का राज्य नहीं बल्कि सरकार के क़ानून की उदारता ने अपराधों को बढ़ावा दिया है न कि अंग्रेज़ी सरकार यहां से उठ गई है। बल्कि सरकार को अधिकार है कि कानून में कठोरता लाकर कठोर दण्ड निश्चित करके अपराधों से रोक दे। जब इन्सानी सरकार का यह हाल है जो ख़ुदाई सरकार की तुलना में कुछ भी नहीं, तो ख़ुदाई सरकार कितनी शक्तिशाली और अधिकार पूर्ण है। यदि ख़ुदा का कानून अभी कठोर हो जाए और हर बलात्कारी पर बिजली टूट पड़े, हर चोर के हाथ बीमारी से गल-सड़ जाएं, हर उद्दण्ड, नास्तिक, अधर्मी प्लेग से मरे तो एक सप्ताह व्यतीत होने से पूर्व ही सम्पूर्ण संसार सद्मार्ग और सौभाग्य की चादर पहन सकता है। अत: ख़ुदा का धरती पर राज्य तो है, लेकिन आकाशीय कानून की उदारता ने स्वतंत्रता दे रखी है कि अपराधी शीघ्र नहीं पकड़े जाते । हां दण्ड भी मिलते रहते हैं, भूकम्प आते हैं, बिजलियां गिरती हैं, ज्वालामुखी पर्वत आतिशबाज़ी की भांति भड़ककर सहस्त्रों जानों का विनाश करते जाते हैं, जहाज़ डूब जाते हैं, रेल गाड़ियों द्वारा सैकड़ों जानें जाती हैं, तूफ़ान आते हैं, मकान गिरते हैं, सांप काटते हैं, दरिन्दे चीर फाड़ डालते हैं, आपदाएं आती हैं। संसार के विनाश करने का न केवल एक बल्कि अनेक द्वार खुले हैं जो अपराधियों को दण्ड देने के लिए ख़ुदा के प्राकृतिक विधान ने निश्चित कर रखे हैं। फिर क्योंकर कहा जा सकता है कि धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं। सत्य यही है कि राज्य तो है। प्रत्येक अपराधी के हाथ में हथकड़ियां और पावों में बेड़ियां पड़ी हैं पर ख़ुदा की नीति ने अपने कानून को इतना उदार बना दिया है कि वह हथकड़ियां और बेड़ियां तुरन्त अपना प्रभाव नहीं दिखाती हैं। पर यदि मनुष्य फिर भी न बचे तो नर्क तक पहुंचाती हैं और ऐसे प्रकोप में डालती हैं जिससे एक अपराधी न जीवित रहे न मरे। अत: क़ानून दो हैं। एक वह क़ानून जो फ़रिश्तों के संबंध में है अर्थात यह कि वे केवल आज्ञापालन के लिए पैदा किए गए हैं। उनका आज्ञापालन करना मात्र प्रकाशमय स्वभाव की एक विशेषता है। वे पाप नहीं कर सकते परन्तु शुभ कर्मों में उन्नति भी नहीं कर सकते (2) दूसरा क़ानून वह है जो मनुष्यों से संबंधित है अर्थात यह कि मनुष्यों के स्वभाव में रखा गया है कि वे पाप कर सकते हैं पर शुभ कर्मों में उन्नति भी कर सकते हैं। ये दोनों स्वाभाविक क़ानून अपरिवर्तनीय हैं। जैसे कि एक फ़रिश्ता इन्सान नहीं बन सकता है ऐसा ही इन्सान भी फ़रिश्ता नहीं हो सकता है। ये दोनों क़ानून परिवर्तित नहीं हो सकते, अनादि और अटल हैं। इसलिए आकाश का क़ानून धरती पर नहीं आ सकता और न धरती का क़ानून फ़रिश्तों पर लागू हो सकता है। इन्सानी भूलें यदि तौबा के साथ समाप्त हों तो वह मनुष्य को फ़रिश्तों से भी श्रेष्ठ बना सकती हैं क्योंकि फ़रिश्तों में उन्नति का तत्व नहीं। मनुष्य के पाप तौबा से क्षमा कर दिए जाते हैं । ख़ुदा की नीति ने कुछ लोगों में ग़ल्तियां करने का सिलसिला शेष रखा है ताकि वे पाप करके अपनी कमज़ोरी से अवगत हों और फिर अपने पापों का परित्याग करके क्षमा प्राप्ति करें। यही क़ानून है जो मनुष्य के लिए निश्चित किया गया है और मानवीय स्वभाव इसी को चाहता है। ग़लती करना और भूलना मनुष्य के स्वभाव की विशेषता है फ़रिश्ते की नहीं। फिर वह क़ानून जो फ़रिश्तों से संबंधित है मनुष्य पर किस प्रकार लागू हो सकता है। यह बात अनुचित है कि किसी कमज़ोरी

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-6)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के ख़िताब के बाद मेहमानों की अभिव्यक्तियां

मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भाषण था क्योंकि यह न केवल डेनमार्क के लिए एक आवश्यक संदेश था बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक आवश्यक सन्देश था। जिस की हम सब को बहुत ज़रूरत है। निश्चित रूप से हुज़ूर अनवर अमन पसन्द करने वाले तथा शांति के इच्छुक हैं।

एक मेहमान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के भाषण और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कहने लगे: हुज़ूर जब यहाँ आए तो मैंने अपने अंदर एक आराम महसूस किया। मुझे नहीं पता कि आप लोग ख़लीफा को कैसे चुनते हैं, लेकिन मैंने उनके चारों ओर एक प्रकाश दिखाई दिया है जो बिना शब्द के बहुत कुछ कह रहा था। यह मेरे लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अनुभव था।

डेनमार्क रेडियो चैनल RADIO 24 SYV के दो पत्रकार ऋषि रशीद साहिबा का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से इनट्रविय़ू।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी फरमाई थी कि इस्लाम पर एक ऐसा समय आएगा कि मुसलमान इस्लाम की मूल शिक्षाओं को भूल जाएंगे और इस्लाम का केवल नाम रह जाएगा। कुरआन अपनी असली अवस्था में तो होगा, लेकिन इस पर अनुकरण न होगा और कुरआन की ग़लत व्याख्या की जाएगी। जब ऐसा समय आएगा तो अल्लाह तआला मुसलमानों के मार्गदर्शन के लिए मसीह और महदी को भेजेगा। हमारा विश्वास है कि भविष्यवाणी के अनुसार जिस मसीह मौऊद और इमाम महदी ने इस्लाम के पुनरुद्धार लिए आना था वह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी के रूप में आ चुका है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसीह और महदी के आने की जो निशानी बताई थीं वे सब पूरी हो चुकी हैं।

जलसा में सम्मिलित होने वाले सम्मानित सदस्यों के ईमान वर्धक विचार

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मेहमानों की प्रतिक्रयाऐं

आज के इस समारोह में शामिल होने वाले बहुत से मेहमान अपने विचारों और हार्दिक भावनाओं को व्यक्त किए बिना न रह सके। इन मेहमानों में से कुछ की भावनाएं नीचे वर्णन की जा रही हैं।

एक मेहमान औरत Lise Simon जो कि टूरिस्ट यूनियन की अध्यक्ष हैं अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि मैं बहुत ख़ुश हूं कि आज रात इस आयोजन में सम्मिलित हूं। ख़लीफा की तक़रीर बहुत शानदार थी। मुझे आशा है कि हम सब अमन के साथ मिल कर रहेंगे। मैं समझती हूं कि इस प्रकार का आयोजन एक दूसरे को समझने के लिए बहुत आवश्यक हैं।

* एक डेनिश मेहमान Sten Hoffmen ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा:

सब से पहले तो मैं दिल की गहराइयों से आप का शुक्रिया अदा करूंगा कि आप ने मुझे इस आयोजन में दावत दी। मुसलमानों की सच्ची शिक्षा के बारे में ख़लीफा के भाषण को सुन कर बहुत अधिक आराम और ख़ुशी हुई। इस तरह के संदेश की आज के समय में बहुत ज़रूरत है। अल्लाह तआला करे कि स्कैंडिनेविया में ख़लीफा के शब्दों को बेहतरीन रंग में समझे जाएं।

* एक मेहमान जोना हान्सन ने कहा: ख़लीफा का भाषण आज बहुत ही रोचक और रोमांचक था। मैं चाहता हूं कि आप के इस भाषण का अध्ययन करूं और अधिक गहराई से अध्ययन करूं। यह एक उत्तम और प्रभाव रखने वाला भाषण था जिसमें मानव-सहानुभूति के आदरणीय विचार शामिल थे।

* नाकस्कोसे संबंधित एक डेनिश मेहमान Klaus Frost Jensen ने कहा: यह समारोह बहुत अच्छा था और सम्माननीय ख़लीफा को देखना और सुनना भी एक यादगार अनुभव था।

* लॉयड काउंसिल के एक सदस्य लियो क्रिस्टेंसेन भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफा का भाषण बहुत प्रभावशाली था। मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई है कि लाखों अहमदी मुसलमान बिना किसी डर के दुनिया में शांति की स्थापना के लिए एक उज्ज्वल मीनार की तरह खड़े हैं।

* लोलैंड काउंसिल के एक अन्य सदस्य ने कहा कि हेनो नडसेन ने कहा: यह आयोजन में शामिल होना मेरे लिए बहुत गर्व और सम्मानजनक है। मेरे निकट हुज़ूर अनवर की यह यात्रा बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस समय, हमें शांति और स्वतंत्रता जैसे मुद्दों पर अक्सर बात करने की आवश्यकता है क्योंकि लोग इस समय पीड़ित हैं और जिनके कारण लोगों और उनकी संस्कृति के बीच दूरी बढ़ रही है। सम्माननीय ख़लीफा ने इन मुद्दों पर बहुत विस्तृत विवरण किया और बहुत स्पष्टीकरण के साथ बताया कि इस्लाम शांति का धर्म है और बहुत प्यार का धर्म है। यह बात दुनिया के भविष्य के लिए बहुत उपयोगी है।

* इस कार्यक्रम में शामिल मेहमान ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा: "मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भाषण था क्योंकि यह न केवल डेनमार्क के लिए एक आवश्यक संदेश था बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक आवश्यक सन्देश था। जिस की हम सब को बहुत ज़रूरत है। निश्चित रूप से हुज़ूर अनवर अमन पसन्द करने वाले तथा शांति के इच्छुक हैं।"

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त किए और कहा कि हुज़ूर अनवर की तकरीर के बाद मेरे मेज़ पर बैठे सभी लोग इस्लाम को सही समझने के बारे में बात कर रहे थे। लोग कह रहे थे कि यह बहुत ख़ुशी की बात है कि इस्लाम को इस खूबसूरत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। विशेष रूप से, डेनिश लोग इस्लाम के केवल एक पहलू को जानते हैं। वे नहीं जानते लेकिन इस्लाम के अंदर अलग-अलग संप्रदाय हैं जो शांति चाहते हैं। मेरे निकट यह बताना बहुत महत्त्वपूर्ण है। मुझे यकीन है कि आज इस कार्यक्रम में शामिल सभी मेहमान एक नई प्रतिबद्धता के साथ घर जाएंगे।

* एक मेहमान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के भाषण और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कहने लगे: हुज़ूर जब यहाँ आए तो मैंने

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जंग बद्र में शामिल होने वाले सहाबा में से हज़रत ख़ल्लाद बिन राफे , हज़रत हारसा बिन सुराकह हज़रत अब्बाद बिन बिशर, हज़रत स्वाद बिन ग़रिय्या रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के जीवन के हालात, उनके ईमान और ईमानदारी तथा निष्ठा, रसूल से प्रेम और इश्क का ईमान वर्धक वर्णन।

अल्लाह तआला उन चमकते सितारों के स्तर ऊंचा करता चला जाए और हमें भी इश्के रसूल अरबी की वास्तविकता को समझने की ताकत प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 जुलाई 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी जिनका नाम हज़रत ख़ल्लाद बिन राफे ज़ुरकी था आप अंसारी थे। यह उन भाग्यशाली लोगों में शामिल थे जिन्होंने जंग बदर और उहद में भाग लिया था। आप को अल्लाह तआला ने बहुत औलाद प्रदान की थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3, पृष्ठ 447 ख़ल्लाद बिन राफे मुद्रित दारुल कुतुब अल्-इलमिया बैरूत 1990 ई)

एक रिवायत में आता है कि मुआज़ बिन राफे अपने पिता से रिवायत करते हैं अपने भाई हज़रत ख़ल्लाद बिन राफे के साथ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक बहुत कमज़ोर ऊंट पर सवार होकर बदर की तरफ निकले यहाँ तक कि हम बरीद स्थान पर पहुँचे जो रोहा के स्थान से पीछे है तो हमारा ऊंट बैठ गया। तो मैंने दुआ की कि हे अल्लाह तआला हम तुझ से नज़र मांगते हैं कि यदि हमें उस पर मदीना लौटा दे तो हम इसे कुरबान कर देंगे। अत: हम इसी अवस्था में थे कि अल्लाह तआला के रसूल हमारे पास से गुज़रे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमसे पूछा कि तुम्हारे साथ क्या हुआ। हमने आपको सब कुछ बताया। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास रुके और आप ने वुज़ू किया। उसके बाद, छोड़ा गए पानी में मुंह का थूक डाला। फिर आप के आदेश से हम ने ऊंट का मुंह खोल दिया। आप ने ऊंट के मुंह में कुछ पानी डाला। फिर कुछ उसके सिर पर, कुछ उसकी गर्दन पर, कुछ उस के कन्धे पर, कुछ उस की कूबड़ पर कुछ उसकी पीठ पर और कुछ उसकी दुम पर (पानी डाला)। तब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की हे अल्लाह तआला ! इस पर राफे और ख़ल्लाद को सवार कर के ले जा। कहते हैं फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पधारे। हम भी चलने के लिए खड़े हुए और चल पड़े यहाँ तक कि हम ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मन्सफ के स्थान के शुरू में पा लिया और हमारा ऊंट काफिले में सबसे आगे था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब हमें देखा तो मुस्कुरा दिए। उसकी कमज़ोरी पूरी तरह से आपकी दुआ से दूर हो गई थी। कहते हैं कि हम चलते रहे यहां तक कि बदर के स्थान पर पहुंच गए। बदर से लौटने पर, जब हम मुसल्ला के स्थान पर पहुंचे तो वह ऊंट फिर से बैठ गया। फिर मेरे भाई ने उसे ज़िब्ह कर दिया और उसका मांस विभाजित किया और हम ने उसे सदका कर दिया।

(किताबुल मुग़ाज़ी अध्याय बदर जिल्द 1 पृष्ठ 25 आलेमुल कुतुब 1984 ई), (असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 181 ख़ल्लाद बिन राफे मुद्रित दारुल कुतुब अल्-इलमिया बैरूत)

एक नज़र मानी थी कि जब वह काम आ जाए तो उसके बाद हम ज़िब्ह कर देंगे। इसके अनुसार, उन्होंने इसका पालन किया।

एक सहाबी का वर्णन मिलता है उसका नाम हज़रत हारसह: बिन सुराका था। उनकी मृत्यु 2 हिजरी में बदर की लड़ाई में हुई थी। उनकी माँ रुबेए बिन्त नज़र हज़रत अनस बिन मालिक की बूआ थीं।

(अल्असाबह फी तमीज़िस्सहाबाह जिल्द 1 पृष्ठ 704 हारतह बिन सुराकह मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत 1995 ई) हिजरत से पहले माँ के साथ इस्लाम स्वीकार किया जबकि अपने पिता वफात पा चुके थे।

(सैरुस्सहाबा जिल्द 3, पृष्ठ 299 मुद्रित दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के और हज़रत साइब बिन उसमान बिन मज़ऊन के बीच भाईचारा का अनुबंध किया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3, पृष्ठ 307 साइब बिन उसमान मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत के 1990 ई)

भाईचारा का समझौता करवाया था। भाई-भाई बनाया था। अबू नईम ने बयान किया कि हज़रत हारसह बिन सुराकह अपनी माँ से बहुत अच्छा बर्ताव करने वाले थे यहाँ तक कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नत में प्रवेश किया तो वहाँ हारसह को देखा। बदर के दिन हब्बान बिन अर्कह: ने आप को शहीद किया। उस ने उन्हें उस समय आप को तीर मारा जब आप चश्मा से पानी पी रहे थे। तीर आपकी गर्दन पर लगा जिस से आप शहीद हो गए। हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पैदल चल रहे थे कि एक अंसारी युवक आप के सामने आया। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे कहा, "हे हारसह:! तुम ने किस अवस्था में सुबह की उसने कहा, मैंने इस अवस्था में सुबह की कि मुझे यकीन है कि मैं अल्लाह तआला पर वास्तव में ईमान लाता हूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया देखो क्या कह रहे हो क्योंकि हर बात की एक तथ्य है। जवान आदमी ने पूछा, हे अल्लाह के रसूल!" मेरा दिल दुनिया से नाखुश है। मैं रात भर जागता हूं और पूरा दिन प्यास रहता हूं। अर्थात इबादत करता हूँ और रोज़ा रखता हूँ और मैं मानो अपने रब्ब के ऊंचा सिंहासन को ज़ाहरी आंखों से देख रहा हूँ और मैं मानो जन्नत वालों को देख रहा हूँ कि वे मानो परस्पर एक दूसरे से मिल रहे हैं और मानो जहन्नम वालों को देख रहा हूँ कि वे इसमें चिल्ला रहे हैं।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम इसी पर स्थिर रहो। तुम एक ऐसे बन्दे हो जिसके दिल में ख़ुदा तआला ने ईमान को प्रकाशित कर दिया है। तब उसने कहा, "हे अल्लाह के रसूल मेरे लिए शदहात की दुआ मांगें।" इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ की और बदर के दिन जब घोड़े सवारों को बुलाया गया तो आप रज़ियल्लाहो अन्हो पहले निकले और सबसे पहले सवार थे जो शहीद हुए। ऐसा कहा जाता है कि यह पहले अंसारी थे, जो जंग में शहीद हुए। हज़रत हारसा की शहादत की खबर, जब उसकी मां को मिली तो उसकी मां रब्बीया रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आई और कहा, "आप को तो पता है कि मुझे हारसा के साथ कितना प्यार था।" बहुत सेवा किया करता यदि वह स्वर्गीय है तो मैं धीरज रखूंगी और यदि ऐसा नहीं है, तो ख़ुदा ही बेहतर जानता है कि मैं क्या करूँगी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हे उम्मे हारसह जन्नत एक नहीं बल्कि कई जन्नतें हैं और हारसा तो उच्च फिरदौस में है। यह सर्वोच्च जन्नत में है। इस पर उसने कहा, मैं निश्चित रूप से धीरज रखूंगी। एक दूसरी रिवायत के अनुसार जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हारसा तो उच्च फिरदौस में है तो उस पर उस की माँ इस हाल में वापस चली गईं कि वह मुस्कुरा रही थीं और कह रही थीं कि वाह वाह हे हारसा।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 650-651 हारसा बन सुराकह मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत)

जंग बदर के अवसर पर ख़ुदा तआला ने कुफ़्फ़ार के सरदारों को मौत के

घाट उतार कर काफिरों को अपमानित किया और जंग बदर में शामिल होने वाले मुसलमानों को सम्मान दिया और ख़ुदा तआला से बदर वालों के बारे में ख़बर पाई कि कि तुम जो चाहो करो तुम पर जन्नत वाजिब हो गई। अल्लाह तआला ने बदर वालों को कहो कि तुम जो मर्ज़ी करो तुम पर जन्नत वाजिब हो गई है। यह अर्थ नहीं था कि जो चाहे तुम करो। अब गुनाह भी करो तो जन्नत वाजिब हो गई। अर्थ यह है कि अब इन से इस प्रकार की कोई बातें नहीं होंगी तो अल्लाह तआला की शिक्षा के ख़िलाफ हों। अल्लाह तआला ख़ुदा उन का मार्ग दर्शन करेगा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हज़रत हारसा बिन मालिक रज़ि अल्लाह तआला अन्हो के बारे में फरमाया जो जंगे बदर के दिन शहीद हो गए थे वे जन्नतुल फिरदौस में हैं।

(शरह ज़रकानी जिल्द 2 पृष्ठ 257 अध्याय जंग बद्र कुबरा दारुल कुतुब अल्-इलमिया बैरूत 1996 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत अब्बाद बिन बश्र हैं। जंग यमामा ग्यारह हिजरी में इन की वफात हुई। हज़रत अब्बाद बिन बिशर का उपनाम अबू बिशर और अबू रबीई है। उन का सम्बन्ध कबीला बनू अब्द अशहल से था। उन की औलाद में केवल एक बेटी थी वह भी फौत हो गई। उन्होंने मदीना में हज़रत मसअब बिन उमैर के हाथ पर हज़रत सअद बिन मुआज़ और हज़रत बनी उसैद बिन हुज़ैर से पहले इस्लाम स्वीकार किया। मदीना के भाईचारा के समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को हज़रत अबू हुज़ैफ: बिन उतबा का भाई बनाया। हज़रत अब्बाद बिन बिशर जंग बदर, उहद, खंदक और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल थे। आप उन सहाबा में से थे जिन को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काअब बिन अशरफ को कत्ल करने के लिए भेजा था।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3, सफ़ा 336 अबाद बिन बश्वर मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत 1990 ई)

काअब बिन अशरफ के कत्ल की घटना जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने विभिन्न इतिहासों से लेकर के सीरत ख़ातमन्निबय्यीन में भी लिखी है। वह घटना इस प्रकार है कि "बद्र की लड़ाई ने जिस तरह मदीना के यहूदियों के दिल के वैर को प्रदर्शित कर दिया था ..... (बद्र की लड़ाई में मदीना के यहूदियों का मानना था कि काफिर जो हैं ये अब मुसलमानों को समाप्त कर देंगे। लेकिन युद्ध का पासा मुसलमानों के पक्ष में पलटा गया। मुसलमानों को जीत हुई और इस कारण यहूदियों का वैर भी प्रकट हुआ।) मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि खेद है कि " बनो कैनका का निर्वासन भी दूसरे यहूदियों को सुधार की तरफ न कर सका और वे अपनी शरारतों और फसादों में बढ़ते गए। अत: कअब बिन अशरफ के कत्ल की घटना इसी क्रम की एक कड़ी है। कअब एक धार्मिक यहूदी था लेकिन वास्तव में यह यहूदी नस्ल नहीं था, बल्कि अरब था। उसके पिता अशरफ बनू हन्नान का चतुर और चालाक व्यक्ति था, जिस ने मदीना में आकर और बनू नज़ीर के साथ संबंध बनाए। उनका सहयोगी बन गया और अंतत: उसने इतना सत्ता और रसूख पैदा कर लिया कि कबीला बनू नज़ीर के रईस आज़म अबू राफि बिन अबू अलहकीक ने अपनी लड़की उसे रिश्ते में दे दी। इसी लड़की के गर्भ से कअब पैदा हुआ। जिस ने बड़े होकर अपने बाप से अधिक सम्मान प्राप्त किया यहां तक कि सारे अरब के यहूदी उस को अपना सरदार मानने लग गए। कअब एक सुन्दर आदमी होने के साथ साथ एक अच्छा शायर और धनवान था। हमेशा अपनी क़ौम के विद्वानों और धनवान लोगों को अपने धन के ज़ोर पर अपने हाथ के नीचे रखता था। परन्तु नैतिक दृष्टि से वे एक बहुत गंदे आचरण का आदमी था और गुप्त चालों और उपद्रव फैलाने की कला में इसे पूर्णता प्राप्त थी। (उपद्रव फैलाने में इसे कमाल हासिल था।) जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में हिजरत के बाद, कआब बिन अशरफ ने अन्य यहूदियों के साथ मिल कर आपसी पारस्परिक दोस्ती, शांति और सुरक्षा के संयुक्त संधि पर हस्ताक्षर किए इस में वह भी शामिल था। ज़ाहिर में तो यह अनुबंध किया लेकिन कअब दिल में अंदर ही अंदर जलन की आग पैदा होना शुरू हुई और उसने इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक को गुप्त चाल और उपद्रवों के साथ विरोध करना शुरू कर दिया। अत: यह लिखा गया है कि हर साल कअब विद्वानों और उलमा को बहुत सा दान दिया करता था। लेकिन जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिजरत के बाद ये लोग अपने वार्षिक वज़ीफे के लिए उसके पास गए तो उसने बातों बातों में उनसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उल्लेख शुरू कर दिया और उन से आप के बारे में धार्मिक पुस्तकों के राय मांगी तो उन्होंने कहा कि स्पष्ट रूप से यह वह नबी है जिसका हमें वादा किया गया था। काबा ने इस जवाब पर बहुत कुछ बुरा भला कहा और उन्हें विदा कर दिया और उन्हें दान नहीं दिया। यहूदी उल्मा की जब रोज़ी बन्द हो गई तो कुछ समय बाद फिर कअब के पास गए और कहा कि हमें निशानों को समझने में भूल हो गई थी। हम ने दोबारा विचार किया है मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह नबी नहीं हैं। जिस का वादा दिया गया है उस उत्तर से कअब की इच्छा पूरी हुई। और उस ने ख़ुश होकर उन को सालाना दान दे दिया। अब यह लिखते हैं कि "ख़ैर यह तो एक धार्मिक विरोध था जो कोई रूप धारण कर रहा था परन्तु आरोप योग्य कोई बात न थी। (लोग धार्मिक विरोध करते हैं यह कोई इस प्रकार की बात नहीं।) और न इस कारण से कअब को सज़ा योग्य समझा जा सकता है। (यह इसके कत्ल की घटना का वर्णन हो रहा है यह तो कोई इस प्रकार की बात नहीं थी कि इस को कत्ल किया जाए परन्तु कारण क्या बना।) "इस के बाद कअब का विरोध चरम सीमा धारण करने लग गया और अन्त में बदर के युद्ध के बाद तो उस ने यह आदत धारण कर ली जो बहुत अधिक उपद्रव फैलाने वाली थी। जिस के कारण से मुसलमानों में बहुत अधिक ख़तरनाक अवस्था पैदा हो गई। वास्तव में बदर से पहले कअब यह समझता था कि मुसलमानों का यह जोश इमान एक अस्थायी बात है और धीरे धीरे ये सब लोग स्वत: अपने पैतृक धर्म की तरफ लौट आएंगे लेकिन जब बदर के अवसर पर मुसलमानों को अप्रत्याशित जीत नसीब हुई और कुरैश के सरदार अक्सर मारे गए, उन्होंने महसूस किया कि यह नया धर्म अब अपने आप मिटता हुआ नज़र नहीं आता। इसलिए बदर के बाद उसने अपनी पूरी कोशिश इस्लाम को मिटाने और तबाह बर्बाद करने में खर्च करने का इरादा किया। उस के हार्दिक द्वेष और ईर्ष्या की पहली अभिव्यक्ति उस अवसर पर हुई जब बदर की जीत की ख़बर मदीना पहुंची तो इस खबर को सुनकर कअब ने सब के सामने यह कह दिया कि ख़बर बिल्कुल झूठी मालूम होती है क्योंकि यह संभव नहीं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरैश के ऐसे बड़े लश्कर पर जीत हासिल हो और मक्का के इतने शानदार रईस ख़ाक में मिल जाएं। और यदि यह समाचार सत्य है तो इस जीवन से मरना बेहतर है। यह कअब ने कहा। जब इस खबर की पुष्टि हुई और कअब का मानना था कि बदर की जीत ने वास्तव में इस्लाम को स्थिरता दी थी जिस प्रकार उसने नहीं सोचा था, वह क्रोध से भरा था और तुरंत यात्रा के लिए तैयार था। क्या उसने मक्का के लिए रवाना हुआ और वहां जाकर, अपनी तकरीर तथा ज़बान के ज़ोर से कुरैश के दिल में जल रही नफरत की आग को और अधिक भड़का दिया।

और जब कअब की उत्तेजना से उनकी भावनाओं में एक बिजली जैसी तेज़ी पैदा हो गई तो उसने उन्हें ख़ाना काबा के सेहन में ले जाकर और काबा के पर्दे उनके हाथों में दे देकर उनसे कसम लीं कि जब तक इस्लाम और संस्थापक इस्लाम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुनिया से मिटा न देंगे तब तक चैन न लेंगे। (मक्का के काफिरों से उसने यह प्रतिज्ञा ली।) मक्का में यह ज्वालामुखी तुल्य वातावरण पैदा करके इस बदबख़्त ने दूसरे कबीलों की तरफ रुख़ किया और कबीला कबीला फिर कर मुसलमानों के विरुद्ध भड़काया। फिर मदीना में आकर मुसलमान औरतों के विरुद्ध गन्दे और अश्लील तरीके से औरतों का वर्णन किया यहां तक कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की औरतों को भी अपने शेअरों का निशाना बनाने से नहीं चूका। अन्त में इस ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कत्ल करने की साज़िश की। और आप को किसी दावत आदि के बहाने से बुला कर कुछ नौजवान यहूदियों से आप के कत्ल करने का प्रोग्राम बनाया। परन्तु ख़ुदा के फज़ल से इस की आप को सूचना मिल गई। और उस की यह साज़िश सफल न हुई। जब नौबत यहां तक पहुंच गई और कअब के ख़िलाफ प्रतिज्ञा तोड़ने, विद्रोह, युद्ध की तैय्यारी, धमकी देकर मारना, अश्लीलता और हत्या की साजिश के सबूत मिल गए तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो अंतर्राष्ट्रीय समझौते की दृष्टि से जो आप के मदीना के आगमन के बाद, मदीना वालों से हुआ था, आप मदीना की डेमोक्रेटिक हुकूमत के प्रमुख और शासक थे। आपने फैसला किया है कि कअब इब्न अशरफ अपने कार्यों के कारण कत्ल के योग्य है और आप ने कुछ सहाबा को बताया कि उसे कत्ल कर दिया जाए। लेकिन चूंकि उस समय कअब के फित्नों से मदीना का परिवेश इस प्रकार का हो रहा था कि अगर उस के विरुद्ध घोषणा कर के कत्ल किया जाता तो मदीना में एक भयंकर आपसी जंग शुरू हो जाने की आशंका थी। जिस में न जाने कितना ख़ून बहाया जाता। और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यथा सम्भव शान्ति की स्थापना तथा खून बहाने को रोकना चाहते थे।(जंग नहीं चाहते थे) आप सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने यह हिदायत फरमाई कि कअब को सब के सामने कत्ल न किया जाए बल्कि कुछ लोग खामोशी से कोई अवसर देख कर उस का काम तमाम कर दें। और यह ड्यूटी आप ने कबीला औस के एक ईमानदार सहाबी मुहम्मद इब्न मुसलमा के ज़िम्मा लगाई और उन्हें ताकीद की कि जो तरीका भी धारण करें कबीला औस के सरदार सअद बिन मआज़ के परामर्श से करें। मुहम्मद बिन मुसलमा ने निवेदन किया कि अल्लाह के रसूल खामोशी के साथ कत्ल करने के लिए तो कोई बात कहनी होगी अर्थात कोई बहाना आदि करना होगा जिस की सहायता से कअब को उस के घर से निकाल कर किसी सुरक्षित स्थान पर कत्ल किया जा सके। आप ने इस महान उद्देश्यों को सामने रखते हुए जो इस कत्ल से पैदा हो सकते थे फरमाया अच्छा। अत: मुहम्मद बिन मुस्लमा ने सअद बिन मुआज़ के परामर्श से अबू नाइला और दो तीन और सहाबा को अपने साथ लिया और कअब के मकान पर जा पहुंचे। और कअब को इस के घर के अन्दर से बुला कर कहा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह हम से सदक़ा मांगते हैं और हम ग़रीब हैं। क्या तुम मेहरबानी कर के हम को कुछ कर्ज़ दे सकते हो। यह बात सुन कर कअब ख़ुशी से उछल पड़ा और कहा अल्लाह की कसम अभी क्या है वे दिन दूर नहीं जब तुम उस आदमी से हट कर दूर हो जाओगे। इस पर मुहम्मद ने जवाब दिया ख़ैर हम तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी धारण कर चुके हैं। और अब हम यह देख रहें हैं कि इस सिलसिला का अन्त क्या होता है मगर तुम यह बताओ कि कर्ज़ दोगे या नहीं? काअब ने कहा हां परन्तु कोई चीज़ रहन रखो। मुहम्मद ने कहा क्या चीज़? इस हतभागे ने कहा कि अपनी औरतों को रहन रख दो। मुहम्मद ने कहा यह किस प्रकार हो सकता है कि तुम्हारे जैसे आदमी के पास हम अपनी औरतें गिरवी रख दें। तुम्हारा तो कोई भरोसा नहीं। उस ने कहा अच्छा तो फिर बेटे सही। मुहम्मद ने कहा यह भी संभव नहीं है कि हम अपने बेटे तुम्हारे पास रहन रख दें। हम सारे अरब का ताना अपने सिर नहीं ले सकते। हां अगर तुम मेहरबानी करो तो हम अपने हथियार तुम्हारे पास रहन रख सकते हैं। कअब राज़ी हो गया और मुहम्मद बिन मुस्लिमा और उन के साथी रात को आने का वादा करके वापस लौट आए। जब रात हुई तो यह पार्टी हथियार आदि साथ लेकर(क्योंकि अब वह खुले तौर पर हथियार ले जा सकते थे।) कअब के मकान पर पहुंचे और उस को बातों में लगा कर बाहर ले आए और थोड़ी देर बाद उस को चलते चलते काबू कर लिया और वे सहाबा जो पहले से हथियार लगाए हुए थे। उस पर वार किया और उस का कत्ल कर दिया। बहरहाल कअब कत्ल हो कर गिरा और मुहम्मद बिन मुस्लिमा और उन के साथियों ने वहां से विदा हो कर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो गए। और आप को इस कत्ल की सूचना दी। जब कअब के कत्ल की ख़बर फैली तो शहर में एक सनसनी फैल गई और यहूदी लोग बहुत जोश में आ गए और दूसरे दिन सुब्ह के समय यहूदियों के एक वफद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और शिकायत की कि हमारा सरदार कअब बिन अशरफ इस प्रकार कत्ल कर दिया गया है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन की बातें सुन कर कहा कि क्या तुम्हें पता है कि कअब किन किन गुनाहों का करने वाले हुआ है? और फिर आप ने संक्षिप्त रूप से उन को कअब के वादा तोड़ने, जंग तथा फित्ना फैलाने का दोषी अशलील कहने और कत्ल का षड्यन्त्र करने वाला की सारी बातें याद दिलाएं जिस पर लोग ख़ामोश हो गए। इस के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन से कहा कि कम से कम भविष्य के लिए अमन तथा सहयोग के साथ रहो और शतुत्रा तथा फित्ना फसाद के बीज न बोऊ। अत: यहूदियों की सहमति से भविष्य के लिए एक नया अनुबंध लिखा गया और यहूदियों ने मुसलमानों के साथ शांति के साथ रहने और फसादों के तरीकों से बचने का नया वादा किया।

(उद्धरित से सीरत ख़ातमन्निबय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 466 से 470)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी बातें सुनकर यह नहीं फरमाया कि मुसलमानों ने उसे कत्ल नहीं किया बल्कि उसके अपराध गंवाए और उसका जो बाहरी परिणाम निकलना चाहिए था वह बताया कि उन हरकतों के कारण उसे कत्ल होना था और यहूदियों को यह स्वीकार करना पड़ा कि आप सही हैं, इसलिए आपने एक नया समझौता किया है, ताकि ऐसी घटनाएं आगे न हों। और भविष्य के लिए शांतिपूर्ण माहौल स्थापित किया जाऐ। यह न हो कि अब यहूदी बदला लेना शुरू कर देते हैं तो मुस्लिम उन्हें दंड दें। यदि यहूदी कत्ल किया जाना ग़लत समझते कि नहीं इस तरीके सा ग़लत किया गया तो ख़ामोश न होते, बल्कि वे ख़ून का बदला लेते। उन्होंने यह मांग नहीं की और ख़ामोश रहे ये बातें बताती हैं कि उस समय कि कानून के अनुसार यह कत्ल जायज़ था। क्योंकि जो फित्ना यह फैला रहा था यह कत्ल से बढ़ कर था। और यह इस प्रकार के मुजरिम की सज़ा थी और यही होनी चाहिए। और उस समय के रिवाज के अनुसार जब इसे दंड दिया गया तो जैसा कि मैंने कहा कि इसी तरह सज़ा दी जा सकती थी। इस रिवाज के अनुसार, यदि सजा दी जा सकती थी जैसा कि हम देखते हैं और यहूदियों के व्यवहार से भी प्रकट होता है जिस प्रकार कि हम देखते हैं तो कोई आपत्ति नहीं होती। अगर नहीं दी जा सकती, तो यहूदियों ने निश्चित रूप से सवाल किया होता कि मुकदमा चलाकर और फिर उन्हें ज़ाहरी रूप से सज़ी दी जाती। अत: यह बात साबित करती है कि उसका यह कत्ल बिल्कुल वैध था और यह सज़ा थी लेकिन यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि आजकल के चरमपंथी गुट ऐसी बातों से ग़लत sense में बात करते हैं और इसी तरह सरकारें भी और यह समझती हैं कि इस तरह कत्ल करना जायज़ है। सबसे पहले तो फित्ना इस प्रकार नहीं फैलाया जा रहा। जिन को कत्ल किया जाता है वे फित्ना फैलाने वाले लोगों में से नहीं होते। दूसरे वहां केवल मुजरिम को सज़ा दी गई थी न कि उस के ख़ानदान को या किसी परिवार वाले को। ये लोग जब कत्ल करते हैं, तो निर्दोष लोगों को कत्ल करते हैं। महिलाओं को कत्ल कर रहे हैं बच्चों को कत्ल कर रहे हैं। कई लोगों को अपाहिज कर रहे हैं। बहरहाल आज कल के नियम के अनुसार यह बातें जायज़ नहीं है, और उस समय वह सज़ा उचित थी और अनिवार्य थी और सरकार ने इसे दिया था।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बाद बिन बिशर को बनू सलीम और मुज़यना के पास सदका वुसूल करने के लिए भेजा। हज़रत अब्बाद बिन बिशर इन के पास दस दिन तक रहे। वहां से वापसी पर बनू मुस्तलिक से सदका वसूल करने लगे। वहां भी आप का निवास दस दिन रहा। इस के बाद आप वापस मदीना आ गए। इसी प्रकार यह रिवायत में आता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बाद बिन बिशर को जंग हुनैन के माल को आमिल निर्धारित किया था और जंग तबूक में आप को अपने पहरे का निगरान निर्धारित किया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3, पृष्ठ 336 अल-बकर अल-उम्मुलियाह बैरूत, अबू दाऊद-बिन-हुमायद 1 99 0)

आप की गिनती विद्वान सहाबा में होती थी। हज़रत आयशा ने कहा कि अंसारी सहाबा में से तीन अंसार ऐसे थे कि किसी को भी उन पर प्राथमिकता नहीं दी जा सकती था और वे सब के सब कबीला बनू अब्दुल-अशहल में से थे। वे तीन थे। हज़रत साद बिन मुआज़, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर और हज़रत अब्बाद बिन बिशर।

हज़रत अब्बाद बिन बिशर से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंसार को सम्बोधित होते हुए फरमाया हे अंसार के गिरोह तुम मेरे शिआर हो। (अर्थात वह कपड़ा जो सब कपड़ों से नीचे होता है और शरीर से मिला रहता है।) और बाकी लोग दिसार हैं(अर्थात वह चादर जो ऊपर से पहनी जाती है) आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझे इत्मिनान है कि तुम्हारी तरफ से मुझे कोई कष्टदायक बात नहीं पहुंचेगी। हज़रत अब्बाद बिशर जंग यमामा में 45 साल की आयु में शहीद हो गए।

हज़रत आइशा से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे घर में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ रहे थे इतने में आप ने अब्बाद बिन बिशर की आवाज़ सुनी। जो मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा आइशा क्या यह अब्बाद की आवाज़ नहीं है? मैंने कहा हां। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हे अल्लाह अब्बाद पर रहम कर।

इसी प्रकार हज़रत अनस से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से जो आदमी एक रात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से निकले। इन में से एक अब्बाद बिन बिशर थे दूसरे में समझता हूं कि हज़रत उसैद बिन हुज़ैर थे और उन के साथ दो चिराग़ जैसे थे। जो उन के सामने रौशनी कर रहे थे। जब वे दोनों अलग अलग हुए तो उनमें से प्रत्येक के साथ एक चिराग़ हो जाता। (रात को अंधेरे में रोशनी दिखाने के लिए।) अंत में वह अपने घर वालों के पास पहुंच गए।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल सलात हदीस 465) (सही अल-बख़ारी किताबुल अलशहादात हदीस 2655) (असदुल ग़ाबह जिल्द 3, पृष्ठ 149-150 अबाद बिन बिशर मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत)

सुलह हुदैबिया के सफर में भी यह शामिल थे। इस यात्रा के विवरण में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चौदह सौ सहाबियों की संख्या से कुछ ऊपर के साथ ज़विल कअदह: 6 हिजरी के शुरू में सोमवार दिन सुबह के समय मदीना से रवाना हुए और इस सफर में अपने आपकी पत्नी उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा आपके साथ थीं। और मदीना के अमीर नुमैलह बिन अब्दुल्लाह को और इमामुस्सलाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम को जो आंखों से विकलांग थे निर्धारित किया गया था। जब आप ज़ुल-हलीफह में पहुंचे जो मदीना से करीब छह मील की दूरी पर मक्का के रास्ता पर स्थित है, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ठहरने का आदेश दिया और नमाज़ ज़ुहर अदा की और नमाज़ के बाद कुरबानी के ऊंटों को जो संख्या में सत्तर थे निशान लगाए जाने का इरशाद फरमाया और सहाबा को हिदायत फ़रमाई कि हाजियों के विशिष्ट वस्त्र यानी जो एहराम कहलाता है वह पहन लें और आप ख़ुद भी ऐहराम बांध लिया और फिर क़ुरैश की स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए कि क्या वे किसी शरारत का इरादा तो नहीं रखते एक ख़बर लाने वाले को अर्थात बसर बिन सुफियान नामक जो कबीला खिज़ाह से संबंध रखता था जो मक्का के करीब बसे थे आगे भिजवा कर धीरे धीरे मक्का की ओर रवाना हुए और अधिक सावधानी के तौर पर मुसलमानों की बड़ी भीड़ के आगे रहने के लिए अब्बाद बिन बिशर की कमान में बीस सवारों की फौज भी निर्धारित की। जब आप कुछ दिन की यात्रा के बाद उस्फान के निकट पहुँचे जो मक्का से लगभग दो मंज़िल के लिए रास्ते पर स्थित है, तो आप के ख़बर देने वाले ने वापस आकर आपकी सेवा में सूचना दी कि क़ुरैश मक्का बहुत जोश में हैं और आप को रोकने के लिए निराकरण किए हुए हैं यहां तक कि उनमें से कुछ ने अपने जोश और वहशत व्यक्त करने के लिए तेंदुए की खाल पहन रखी हैं और युद्ध का पक्का इरादा करके मुसलमानों को रोकने का इरादा रखते हैं। यह भी मालूम हुआ कि क़ुरैश ने अपने कुछ जांबाज़ सवारों का एक दस्ता ख़ालिद बिन वलीद की कमान में जो तब तक मुसलमान नहीं हुए थे आगे भिजवा दिया है और कहा कि यह दल इस समय मुसलमानों के पास पहुंचा हुआ है और इस दल में अकरमह बिन अबु जेहल भी शामिल है। (यह ख़बरें आप को दी गईं।) आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह ख़बर सुनी तो टकराव से बचने के लिए सहाबा को आदेश दिया कि मक्का के प्रमुख रास्ते को छोड़कर दाईं ओर होते हुए आगे बढ़ें। इसलिए मुसलमानों ने एक बीहड़ और कठिन रास्ते पर पड़ कर समुद्र से होते हुए आगे बढ़ना शुरू कर दिया। "

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्निबय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 749-750)

और वहां पहुंचे। आगे फिर सुलह हुदैबिया की पूरी घटना है तो अब्बाद बिन बिशर भी उन लोगों में शामिल थे जिन्हें एक दस्ता का सवार बनाकर जानकारी लेने के लिए भेजा। बहुत भरोसेमंद सहाबी थे जिन पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत विश्वास था।

हज़रत अब्बाद बिन बिशर हुदैबिया के अवसर पर होने वाली बैअत जो बैअत रिज़वान कहालाती है इसमें शामिल होने वाले सहाबा में से हैं। जंग ज़ातुर्रिकाक की एक घटना है कि आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रात एक जगह पर पड़ाव किया। उस समय तेज़ हवा चल रही थी तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक घाटी में ठहरे हुए थे। आपने सहाबा से पूछा कौन है जो आज रात हमारे लिए पेहरा देगा। इस पर हज़रत अब्बाद बिन बिशर रज़ियल्लाहो अन्हो और हज़रत अम्मार बिन यासिर खड़े हुए और कहने लगे कि हम आप के लिए पहरा देंगे। फिर वे दोनों घाटी की चोटी पर बैठे गए। फिर हज़रत अब्बाद बिन बिशर ने हज़रत अम्मार बिन यासिर से कहा कि आरम्भिक रात में मैं पहरा दे लूँगा और उन्हें कहा कि आप जाकर सो जाएं। और आधी रात में आप पहरा दे देना कि मैं सो जाऊंगा। अत: हज़रत अम्मार बिन यासिर तो सो गए और हज़रत अब्बाद बिन बिशर खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। उधर नजद क्षेत्र में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहां उनकी ज्यादतियों के कारण महिलाओं को जो पकड़ा था तो उनमें से एक महिला का पति उस समय ग़ायब था। अगर वह होता तो वह अपने पति के साथ होती लेकिन बहरहाल जब वह वापस आया तो उसे पता चला कि उसकी पत्नी को मुसलमानों ने बंदी बना लिया है। उसने उसी समय कसम खाई कि मैं तब तक आराम से न बैठूँगा जब तक मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नुकसान न पहुंचा लूं या आप के सहाबा का खून न बहा लूं। तो वह घाटी के पास आया जहां आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ठहरे थे जब उसने घाटी के दर्रा पर हज़रत अब्बाद बिन बिशर की छाया देखी तो बोला कि यह दुश्मन का पहरेदार है। उसने तीर कमान पर चढ़ाकर चला दिया जो हज़रत अब्बात बिन बिशर के शरीर में लगा। अब्बाद बिन बिशर उस समय नमाज़ में व्यस्त थे। उन्होंने तीर को फेंक दिया और नमाज़ जारी रखी, उसने दूसरा तीर मारा। वह भी उन्हें लगा। उसने उसे भी निकाल कर बाहर फेंक दिया। फिर जब तीसरा तीर मारा, तो अब्बाद बिन बिशर का बहुत खून बह निकला। उन्होंने नमाज़ पूरी की और हज़रत अम्मर बिन यासिर को जगाया। जब हज़रत अम्मार बिन यासिर ने हज़रत अब्बाद बिन बिशर को घायल हालत में देखा तो पूछा कि पहले क्यों नहीं जगाया। तो आप ने कहा, मैं नमाज़ में सूरह कहफ पढ़ रहा था। मेरा दिल नहीं चाहा कि मैं को तोड़ दूं।

(अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 2 पृष्ठ 368-369 जंग ज़ातुर्रिकाक दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत 2002 ई)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी बताते हैं कि मैंने हज़रत अब्बाद बिन बिशर को यह कहते हुए सुना कि अबू सईद! मैंने रात को सपना देखा कि आकाश मेरे लिए खोल दिया गया था। फिर ढांक दिया गया है। कहते हैं कि इन्शा अल्लाह मुझे शहादत प्राप्त होगी। मैंने कहा, अल्लाह तआला की कसम तूने भलाई देखी है।" हज़रत अबू सईद खुदरी बताते हैं कि युद्ध यमामह में मैंने देखा कि हज़रत अब्बात बिन बिशर अंसार को पुकार रहे थे कि तुम लोग तलवारों के म्यान तोड़ डालो। और लोगों से अलग हो गए। उन्होंने अंसार में से चार सौ आदमी छांट लिए जिनमें कोई अन्य शामिल नहीं था जिनके आगे हज़रत अब्बाद बिन बिशर , हज़रत अबु दुजानह और हज़रत बराअ बिन मालिक थे। वे लोग बाबुल हदीकत तक पहुंचे और प्रचन्ड जंग की। हज़रत अब्बाद बिन बशर शहीद हो गए। मैंने आप के चेहरे पर तलवारों के इतने निशान देखे कि वह केवल शरीर की निशानियों से पहचान सका।"

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3, पृष्ठ 336-337 अब्बात बिन बिशर मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत स्वाद बिन ग़रिय्या रज़ियल्लाहो अन्हो। यह भी अंसारी थे। उनका ज़िक्र भी आता उनका संबंध कबीला बनू अदि बिन नज्जार से था। जंग बदर और उहद और ख़ंदक और फिर इस के बाद की जंगों में शरीक हुए। जंग बदर में, उन्होंने ख़ालिद बिन हाशिम मख़ज़ूमी को गिरफ्तार कर लिया। एक रिवायत में आता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को ख़ैबर का आमिल निर्धारित कर के भेजा था। आप वहां से अच्छी खजूरें ले आए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे एक साअ अच्छी खजूरें दो साअ आम खजूरों के बदले में खरीदीं।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 590 स्वाद बिन ग़रिय्या मुद्रित दारुल कुतुब अल्-इलमिया बैरूत)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खजूरें पसंद आईं तो आप ने इस की जो वर्तमान कीमत थी वह खजूरों के मुकाबला में खजूरें दे कर ख़रीदीं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब सीरत ख़ातमन्निबिय्यीन में जंग बदर की घटनाओं में वर्णन करते हैं कि हज़रत स्वाद की नेक किस्मत और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का उल्लेख मिलता है। रमज़ान दो हिजरी की 17

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

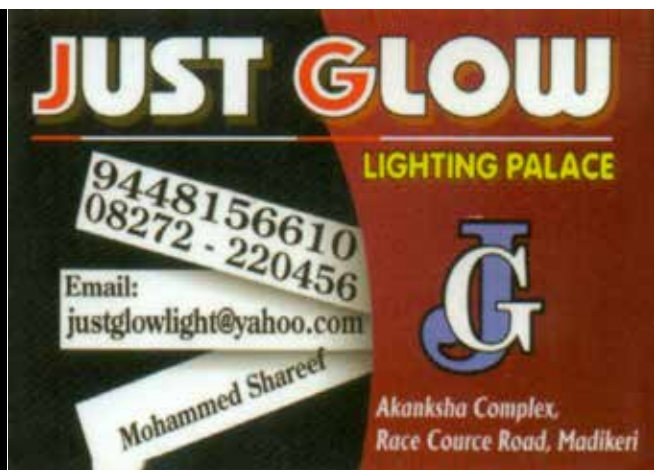

तारीख़ का जुम्अ: था। ईस्वी सन के अनुसार 14 मार्च 623 ई थी। सुबह उठकर सबसे पहले नमाज़ अदा की और फिर एक ख़ुदा की उपासना करने वाले एक ख़ुले मैदान में सिज्दा करने लगे। तब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिहाद पर एक ख़ुत्बा दिया। फिर जब थोड़ी सी रोशनी थी, तो आपने एक तीर के संकेत के साथ मुसलमानों की सफों को ठीक करना शुरू कर दिया। एक सहाबी सुवाद नामक पंक्ति से कुछ आगे बढ़ गए। आपने उसे तीर के संकेत से वापस पीछे जाने के लिए कहा, लेकिन संयोग से आपके तीर की लकड़ी उस की छाती पर जा लगी। उस ने हौसला से यह कहा, "हे अल्लाह के रसूल!" आप को ख़ुदा ने हक तथा इंसाफ के साथ भेजा है। परन्तु आप ने मुझे तीर मारा है। अल्लाह की कसम मैं तो इस का बदला लूंगा। (इस पर सहाबा बड़े हैरान तथा परेशान थे कि सुवाद को क्या हो गया है। लेकिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत दया से कहा कि अच्छा सवाद मैंने तुम्हें मारा है तो तुम भी मुझे तीर मार लो। आपने अपनी छाती से कपड़ा उठा दिया। सुवाद ने मुहब्बत से आगे बढ़ कर आप का सीना चूम लिया। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे मुस्कुराते हुए कहा। सुवाद! यह तुम्हें क्या सूझी? उसने रुंधी आवाज़ में जवाब दिया कि हे अल्लाह के रसूल दुश्मन सामने है कुछ ख़बर नहीं कि यहां से बच कर जाना होता है या नहीं। मैंने चाहा कि शहादत से पहले आप के मुबारक से शरीर अपना शरीर छू लूँ और प्यार करूं।" इस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप के लिए भलाई की दुआ की।"

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्निबय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 357-358), (असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 590 स्वाद बिन ग़रिय्या मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत)

इन सहाबा के आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क और मुहब्बत के भी अजीब अंदाज़ थे।

एक हज़रत उक्काश की घटना आती है वह तो बड़ी उम्र में जाकर बहुत बाद की बात है और यह शुरू की बात है। यह हर समय इस ताक में रहते थे, इस कोशिश में रहते थे कि कैसे कोई मौका मिले और हम इश्के मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को न केवल व्यक्त करें बल्कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निकटता से बरकतें पाने वाले भी हों।

अल्लाह तआला इन चमकते हुए सितारों के स्तर उच्च करता चला जाए और हमें भी इश्के रसूले अरबी की वास्तविकता को समझने की तौफीक प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 1 का शेष

को ख़ुदा से संबंधित किया जाए । केवल क़ानून के परिणाम हैं जो धरती पर जारी हो रहे हैं। प्रत्येक अनुचित बात के कहने से ख़ुदा की शरण में आता हूं, क्या ख़ुदा इतना निर्बल है जिसका राज्य और शक्ति और गरिमा केवल आकाश तक ही सीमित हैं या धरती का कोई और ख़ुदा है, जो धरती पर विरोधी अधिकार रखता है। ईसाइयों का इस बात पर बल देना अच्छा नहीं कि केवल आकाश में ही ख़ुदा का राज्य है जो अभी धरती पर नहीं आया। क्यों कि वे इस बात के समर्थक हैं कि आकाश कुछ भी नहीं। अब स्पष्ट है कि जब आकाश कुछ चीज़ नहीं जिस पर ख़ुदा का राज्य हो और धरती पर भी उसका राज्य आया नहीं तो परिणामत: ख़ुदा का राज्य किसी स्थान पर भी नहीं जबकि इसके बावजूद हम उसका धरती का राज्य स्वयं अपने नेत्रों से देख रहे हैं। उसके कानून के अनुसार हमारी आयु समाप्त हो जाती है और हमारी हालतें परिवर्तित होती रहती हैं, हम सैंकड़ों प्रकार के आराम और कष्ट देखते हैं, सहस्त्रों लोग ख़ुदा की आज्ञा से प्राण त्यागते हैं, धरती ख़ुदा की आज्ञा से सहस्त्रों प्रकार के फल-फूल उत्पन्न करती है, तो क्या यह सब कुछ ख़ुदा के राज्य के बिना हो रहा है। आकाशीय पिण्ड तो एक ही गति पर चले जाते हैं उनमें तबदीली और परिवर्तन, जिससे एक तबदील करने वाले और परिवर्तनकर्ता का ज्ञान होता हो कुछ आभास नहीं होता, परन्तु धरती सहस्त्रों परिवर्तनों और उतार-चढ़ाव का निशाना हो रही है, प्रतिदिन करोड़ों मनुष्य संसार से चल बसते हैं और करोड़ों पैदा होते हैं । हर पहलू और हर प्रकार से एक सर्व शक्ति सम्पन्न श्रृष्टा के आधिपत्य का बोध हो रहा है, तो क्या अब तक धरती पर ख़ुदा का राज्य नहीं। इन्जील ने इस संदर्भ में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया कि धरती पर क्यों अब तक ख़ुदा का राज्य नहीं आया ।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 34 से 37)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

अख़बार बदर के पर्चों की सुरक्षा करें

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई से निरन्तर कादियान से प्रकाशित हो रहा है। और जमाअत के लोगों की धार्मिक ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में कुरआन मजीद की आयतें, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के मलफूज़ात तथा लेखनी सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज के ख़ुत्बा जुम्अ:, ख़िताब, ईमान वर्धक पैग़ाम, हुज़ूर अनवर के ईमान वर्धक दौरे और रिपोर्टें प्रकाशित होती हैं। इन का अध्ययन करना इन को दूसरों तक पहुंचाना और अपने बच्चों की तालीम तथा तरबियत करना हम सब का फर्ज़ है इन सब उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अख़बार बदर के पर्चों की सुरक्षा करना हम सब की प्रमुख ज़िम्मेदारी है।

धार्मिक शिक्षा पर आधारित यह अख़बार चाहता है कि इस का सम्मान किया जाए। अत: इस को रद्दी में बेचना इस के सम्मान को नष्ट करने के समान है। अगर इस को संभलाना संभव न हो तो इस को ध्यान पूर्वक नष्ठ कर दें। ताकि इन पवित्र बातों का अपमान न हो। आशा है कि जमाअत के लोग इस और विशेष ध्यान देंगे और इस से लाभांवित होने की कोशिश करेंगे। और इन बातों को ध्यान में रखेंगे।

(सम्पादक)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

अपने अंदर एक आराम महसूस किया। मुझे नहीं पता कि आप लोग ख़लीफा को कैसे चुनते हैं, लेकिन मैंने उनके चारों ओर एक प्रकाश दिखाई दिया है जो बिना शब्द के बहुत कुछ कह रहा था। यह मेरे लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अनुभव था।

* एक मेहमान ने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया और कहा: हुज़ूर ने जो बातें वर्णन की हैं इन पर मुझे पूर्ण विश्वास है अर्थात अमन को बनाए रखें तथा इस बात को विश्वसनीय बनाया जाए कि एक दूसरे से वही व्यवहार किया जाए जो हम अपने साथ होता हुआ देखना चाहते हैं।

एक मेहमान मित्र ने कहा कि: धार्मिक स्वतंत्रता की मौजूद होना बहुत महत्त्वपूर्ण है ताकि प्रत्येक धर्म के लोग सहिष्णुता के साथ एक साथ रह सकें और बिना किसी हिंसा के बोल सकें। यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संदेश है।

* समारोह में शामिल एक मेहमान ने कहा कि हुज़ूर का ख़िताब स्वतंत्रता, शांति और प्रेम की स्पष्ट आवाज़ था और आज एक नई भावना लेकर घर जाऊँगा क्योंकि आपका बयान बहुत स्पष्ट था। आपने बार-बार वही संदेश दिया है जो मेरे लिए दुनिया के लिए महत्त्वपूर्ण है।

* एक मेहमान ने इन शब्दों में अपने विचार व्यक्त किए कि: आज का यह अनुभव मेरे ज्ञान वृद्धि का कारण हुआ मैं समझता हूं कि हुज़ूर अनवर का संदेश हमारे और अन्य देशों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। चाहे आप किसी भी धर्म से संबंधित हों, एक दूसरे का सम्मान करना महत्त्वपूर्ण है।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मुझे आज का सम्बोधन बहुत प्रभावशाली लगा। मेरे लिए यह पहला अवसर था कि मैं किसी मुस्लिम नेता को सुन रहा था। हुज़ूर अनवर की विशिष्ट विषयों पर राय बहुत रोचक थी, और यह ख़िताब बहुत हौसला वाला और सुन्दर था। आज के इस सम्बोधन को सुनना बहुत अच्छा था।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मुझे आशा है कि आज के भाषण के दौरान लोगों के लोगों की मुसलमानों के बारे में राय बदल जाएगी। इस्लाम को बेहतर समझने के लिए अब मैंने कुरआन करीम भी मंगवाया है, जिस में हाशिए भी मौजूद हैं। आज की शाम के बाद मुझे अपने कम ज्ञान का पता चला।

* एक मेहमान ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए वर्णन किया कि: मैंने हुज़ूर के व्यक्तित्व को बहुत सहानुभूति वाला पाया। आपने अपना सम्बोधन बहुत सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया है। मैंने देखा कि आपने अन्य वक्ताओं की बात को भी बहुत ध्यान से सुना है। इसके अलावा, आपकी बात तीसरी विश्व युद्ध के बारे में बहुत ज्ञान वर्धक थी, जिन को सुन कर मैं थोड़ा परेशान भी हो गया था, लेकिन आपके सम्बोधन से एक प्रकार की शान्ति प्राप्त हुई।

* एक मेहमान दोस्त ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: हुज़ूर ने जिस तरीके और दर्शन से मौजूदा परिस्थितियों तथा मामलों पर प्रकाश डाला वह निहायत प्रभावशीलता और दिलचस्प थी।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "किसी भी आयोजन के लिए यह आवश्यक है कि इस आयोजन का कुछ उद्देश्य होना चाहिए और आज के इस आयोजन का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था। आज इस्लाम के नाम पर आतंकवाद चल रहा है, इसलिए हमें हुज़ूर अनवर और आप जैसे इस्लाम की सच्ची और शांतिपूर्ण शिक्षाओं का वर्णन करने वाले लोगों की आवश्यकता है। हर किसी के लिए इन ख़ूबसूरत शिक्षाओं के बारे में जानना महत्त्वपूर्ण है।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "आज मैं बहुत खुश हूं। इस वैश्विक संकट के समय, हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जिनकी धार्मिक शिक्षाएं सभी के लिए शांति, प्रेम और सम्मान पर आधारित हों। इस्लाम के बारे में डेनमार्क में यह अवधारणा आम नहीं है। लेकिन मुझे पता है कि यह मेरे लिए हकीकी इस्लाम है और मुझे यह भी पता है कि अगर सभी को यह पता चल जाए कि यह सच्चा इस्लाम है तो दुनिया की परिस्थितियां आज से बहुत अलग हो जाएं। मैं आज हुजूर की उपस्थिति के बारे में बहुत उत्साहित हूं।

* एक डेनिश मेहमान ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा: मेरी राय में हुज़ूर अनवर का सम्बोधन बहुत दिलचस्प और ध्यान देने योग्य था। मुझे हुज़ूर अनवर की उपस्थिति के बहुत सकारात्मक विचार के साथ दुनिया को नए तरीके से समझने का अवसर मिला। मैंने इसे ध्यान और संतुष्टि से सुना है।

* एक मिस्र के प्रोफेसर इस आयोजन में शामिल थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़िताब सुन कर कहने लगे कि , "यह मेरे लिए नया नहीं है, मैं ख़ुद भी मुसलमान हूं लेकिन जिस तरह से ख़लीफा ने प्रस्तुत किया है, मैंने अपने जीवन में कभी इसके बारे में नहीं सुना। काश हमारे विद्वानों और नेता इस तरीके से इन बातों को समझते और इन चीज़ों को इस तरह से प्रस्तुत करें तो आज हमारी हालत यह न होती।

* एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, "मैंने जो बातें आरम्भ में सुनीं मुझे बहुत अच्छी लगीं उसके बाद मैंने सोचा कि शायद ख़लीफतुल मसीह हमें ख़ुश करने के लिए अच्छी बातें कर रहें हैं। लेकिन जब ख़लीफा ने डेनिश कार्टून के बारे में बात की, तो मुझे लगा कि यह बहुत महत्त्वपूर्ण था और यह एक गंभीर मामला था, और डेनिश लोगों ने इसे गंभीरता से लिया और यहां तक कि यदि उन्होंने इसके ख़िलाफ बात की, तो वे भी बुरा महसूस करेंगे। लेकिन जब ख़लीफा ने अपने शब्दों को पूरा किया तो उन्होंने अपनी पूरी बात की और उन्होंने अपने शब्दों को समझा दिया और किसी ने कोई बात भी बुरी महसूस नहीं की।

दूसरी बात जिसने मुझे प्रभावित किया है वह है कि ख़लीफा ने अपने ख़िताब में न्याय तथा इंसान का वर्णन किया है और अन्य सभी से न्याय की मांग भी की। उन्होंने इस न्याय का अपने सम्बोधन में भी ध्यान रखा। जहां पर उन्होंने पश्चिमी सरकारों की कमज़ोरियों का उल्लेख किया, उन्होंने मुसलमानों की ग़लतियों और कमज़ोरियों पर भी ध्यान केंद्रित किया और यह केवल वास्तविक और सच्चे आध्यात्मिक नेता द्वारा ही संभव हो सकता है।

* चर्च के एक प्रतिनिधि ने कहा कि मेरा ख़लीफतुल मसीह को मिलने को दिल चाह रहा है। जब उन्हें यह बताया गया ख़लीफतुल मसीह औरतों के सम्मान और इज़्ज़त में उनके साथ हाथ नहीं मिलाते तो उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि ख़लीफतुल मसीह का अस्तित्व बहुत साफ और आध्यात्मिक है। मैं कमज़ोर और गुनाहगार हूं, मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि मुझ जैसे कमज़ोर इंसान का हाथ इस आध्यात्मिक अस्तित्व को छूए।

आठ बजे यह आयोजन अपने अंत को पहुंचा । होटल छोड़ने से पहले, नाकस्को से आने वाले मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप तस्वीरें बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। नाकस्को से मेहमानों का एक विशाल प्रतिनिधिमंडल आज के आयोजन में शामिल होने के लिए बसों के माध्यम से आया था।

बाद यहां से रवाना होकर पौने नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मस्जिद वापस लौटे।

सवा नौ बजे,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद नुसरत जहां में तशरीफ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

10 मई 2016 (दिनांक मंगलवार)

सुबह चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां तशरीफ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने डाक ख़त और रिपोर्टों को देखा और निर्देश दिए।

एक रेडियो प्रतिनिधि का हुज़ूर अनवर के साथ इनट्रवियू

कार्यक्रम के अनुसार, सुबह साढ़े दस बजे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे। डेनमार्क रेडियो चैनल RADIO 24 SYV के दो पत्रकार ऋषि रशीद साहिबा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का इनट्रवियू लेने के लिए आई हुई थीं।

*** पत्रकार ने पहला सवाल यह किया कि आप ख़ुद को अहमदिया जमाअत क्यों कहते हैं?**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी फरमाई थी कि इस्लाम पर एक ऐसा समय आएगा कि मुसलमान इस्लाम की मूल शिक्षाओं को भूल जाएंगे और इस्लाम का केवल नाम रह जाएगा। कुरआन अपनी असली अवस्था में तो होगा, लेकिन इस पर अनुकरण न होगा और कुरआन की ग़लत व्याख्या की जाएगी। जब ऐसा समय आएगा तो अल्लाह तआला मुसलमानों के मार्गदर्शन के लिए मसीह और महदी को भेजेगा। हमारा विश्वास है कि भविष्यवाणी

के अनुसार जिस मसीह मौऊद और इमाम महदी ने इस्लाम के पुनरुद्धार लिए आना था वह आ चुका है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसीह और महदी के आने की जो निशानी बताई थीं वे सब पूरी हो चुकी हैं।

अन्य मुस्लिम कहते हैं कि मसीह और महदी दो अलग-अलग वुजूद हैं। मसीह आसमान में बैठा है और आख़री दिनों में आएगा, और महदी अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। जब हम कहते हैं कि मसीह और महदी एक ही वुजूद हैं और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले मसीह और महदी को एक ही अस्तित्व करार दिया है।

हम कहते हैं कि इस दुनिया में आता है वह व्यक्ति हज़ारों सालों तक नहीं जी सकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आयु पा कर वफात पा जाता है। हम कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति इतने लंबे समय तक जीने का हकदार था, तो वह सबसे प्यारे नबी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। हम कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम वफात पा चुके हैं और जिस मसीह ने भी आना था आप की प्रतिरूप बन कर आना था।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया यह भी भविष्यवाणी थी कि जो मसीह और महदी आएगा वह अपनी जमाअत बनाएगा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी भी की थी कि जिस तरह यहूदियों के विभिन्न संप्रदाय बने थे इसी तरह इस्लाम में भी विभिन्न संप्रदाय बनेंगे। और इनमें से एक संप्रदाय इस्लाम की सच्ची और सही शिक्षाओं का पालन करेगा और वह जमाअत होगी। इसलिए हम ख़ुद को जमाअत अहमदिया कहते हैं।

*** पत्रकार ने सवाल किया: जब में यहाँ किसी कार्यक्रम में सुन्नी और शिया इमाम और विद्वानों को बुलाती हूँ और जब यह कहती हूँ कि हम अपने इस कार्यक्रम में जमाअत अहमदिया के प्रतिनिधि भी बुलाना चाहते हैं तो वह मना कर देते हैं और ये लोग आप को अपनी तरह का मुस्लमान नहीं समझते।**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी यह भी थी कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि तुम में नबुव्वत स्थापित रहेगी जब तक अल्लाह तआला चाहेगा। फिर वह उसे उठा लेगा और नबुव्वत की प्रणाली पर ख़िलाफत स्थापित होगी। फिर उसके बाद उसके बाद तकदीर के अनुसार कष्ट देने वाली बादशाहत कायम होगी (और यह ज़माना 300 साल तक फैला रहेगा।) इसके बाद फिर पहले से बढ़कर जाबिर बादशाहत कायम होगी। (और यह अंधेरा का समय एक हज़ार साल तक फैला होगा।) तब अल्लाह तआला की दया होगी और इसके बाद नबुव्वत की प्रणाली पर खिलाफत स्थापित होगी।

इस भविष्यवाणी के अनुसार तेरहवीं शताब्दी के अंत में या चौदहवीं शताब्दी की शुरुआत में मसीह व महदी ने प्रकट होना था। हम कहते हैं कि वह आ चुका है जब कि ये लोग कहते हैं कि वह नहीं आया।

हम यह कहते हैं कि आने वाले की स्थिति नबी की है। वह नबी है और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में इसे चार बार अल्लाह का नबी कहा है। और वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत के साथ आया है और खोई नई शरीयत नहीं लाया। कुरआन वही है और इस्लामी शिक्षाएं समान हैं कोई नई शिक्षा नहीं है। इउस अर्थ में वह ज़िल्ली (प्रतिरूप) नबी है। जब कि दूसरे कहते हैं कि वह किसी भी दृष्टि में एक नबी नहीं है। अत: हमारे और उनके बीच एक अंतर है।

अगर आप यह कहते हैं कि अब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आ सकता तो यह ख़ुदा तआला के गुण और उस की ताकतों को खत्म करने वाली बात है और कोई आदमी यह अधिकार नहीं रखता कि वह ऐसी हरकत करे अत: यह कारण है अन्य लोग हमें मुसलमानों के रूप में स्वीकार नहीं करते।

वे कहते हैं कि हम मुसलमान नहीं हैं क्योंकि हमारा यह विश्व है कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अल्लाह तआला के नबी हैं। हम कहते हैं कि हमारा विश्व इस यह है कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के एक नबी हैं, और आप अलैहिस्सलाम को नबी की यह उपाधि ख़ुद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी है और आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे अनुकरण तथा पैरवी में नबी के स्थान पर हैं।

*** पत्रकार ने कहा कि मुस्लिमों की मूल धारणा तो यही है कि एक ख़ुदा है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके आखरी नबी हैं।**

उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया : आप यह न कहें कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के अंतिम नबी हैं आप यह कहें कि ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह कि ख़ुदा एक है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के रसूल हैं। इस शब्द में इसका उल्लेख नहीं है कि वह अंतिम नबी हैं।

बाकी जहां तक अंतिम की बात है क़ुरआन करीम आप को ख़ातमन्नबिय्यीन कहता है और हम इस के दूसरों से अलग यह अर्थ करते हैं कि इसका मतलब यह है कि आप नबियों की मुहर हैं। हम इसे मुहर के अर्थों में लेते हैं। अर्थात आप की मुहर के बिना, अब कोई नया नबी नहीं आ सकता है। हाँ, आपकी मुहर के साथ आ सकता है। कुरआन शरीयत की आखरी पुस्तक है, अब कोई नई शरीयत नहीं है। और शरीयत लाने वाले आखरी नबी केवल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है।

अन्य लोग ख़ातमन्नबिय्यीन के यह अर्थ करते हैं कि आपने मुहर का लगा कर नबी की उपाधी को ही बन्द कर दिया अर्थात अब नबी के आने का दरवाज़ा बंद हो गया है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: किसी भी इंसान का यह अधिकार नहीं की वह इन आयतों के वह अर्थ करे जो ख़ुदा तआला की गुणों को सीमित करे और इस के अधिकार और हक को रोक दे।

***पत्रकार ने सवाल किया कि जब दूसरे मुसलमान आप मुसलमान नहीं समझते तो कैसा महसूस करते हैं जब कि आपके पास मस्जिद भी है और आप एक ही कुरआन की तिलावत करते हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाते हैं। इन सभी चीजों के बावजूद आप को दूसरे मुसलमान नहीं समझते?**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया : आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी था कि जिस तरह यहूद ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को स्वीकार नहीं किया था बावजूद इसके कि तौरत में आपके आने के बारह में सारी पेशगोइयां मौजूद थीं। इसी प्रकार, अन्तिम समय के अंत में आने वाले नबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की राह में मुसलमानों की तरफ से रोके डाली डाऐंगी और बावजूद निशानों के पूरा होने के विरोधी स्वीकार नहीं करेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: बावजूद इन सब रोक़ों के बावजूद हम इस्लाम की सच्ची और सही शिक्षाओं को फैला रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप लाखों लोग हर साल हमसे जुड़ रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : अब आप देखें कि 1889 ई में एक व्यक्ति ने कादियान जैसे एक छोटे से गांव में मसीह और महदी होने का दावा किया और घोषणा की कि वही मौऊद मसीह और महदी हूँ जिसके आने की भविष्यवाणी की गई थी। और जब वह घोषणा कर रहा था कि वह अकेला था। तब लोगों ने उनके साथ मुलाकात शुरू की और जब 1908 ई में उनकी मृत्यु हो गई, तो उनका समुदाय 4 मिलियन तक पहुंच गया था। और भारत और वर्तमान पाकिस्तान से बड़ी संख्या में उस को स्वीकार करने वाले लोगों की थे। फिर इस के बाद अरब देशों के लोगों ने भी आपको स्वीकार किया और आपकी जमाअत में शामिल हो गए। इसी तरह, अन्य देशों से, इंडोनेशिया के हज़ारों लोग इस समुदाय में शामिल हो गए। मलेशिया से कई लोग जुड़े गए हैं। दुनिया भर के कई लोग धीरे-धीरे जोड़ रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया अगर इन सब शामिल होने वालों को पता था कि हम इस्लाम की सही शिक्षाओं को नहीं फैला रहे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनका सही स्थान नहीं दे रहे और हम ख़ातमन्नबिय्यीम के ग़लत अर्थ कर रहे हैं और क़ुरआन की आयतों की सहीह तरीके से व्याख्या नहीं करते हैं तो हज़ारों मुसलमान हमारे साथ क्यों शामिल हो रहे हैं? तो इस प्रकार हमारी जमाअत की संख्या इस तरह से बढ़ रही है। कम्युनिटी इसी तरह बढ़ती हैं और हमारा यह विश्वास है कि इन्शा अल्लाह एक दिन हम सफल होंगे। हम विजयी होंगे। अब मुझे बताएं कि यहूदियों ने ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया था या नहीं। इसमें 300 साल लगे और फिर ईसाई धर्म फैल गया।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : संस्थापक जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद मसीह और महदी अलैहिस्सलाम ने यह भविष्यवाणी फरमाई थी कि तीन सौ साल का समय नहीं गुज़रेगा कि दुनिया में एक बड़ी संख्या मेरी जमाअत में शामिल

हो चुकी होगी।

इस पर पत्रकार ने कहा कि आप मजबूत और शक्तिशाली हैं, और अभी दो सौ से अधिक वर्ष बाकी हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : एक सौ पच्चीस साल गुज़र चुके हैं और हम मिलियनेयर में हैं। एक आदमी ने पंजाब के एक छोटा गांव कादियान से दावा किया था और उस समय वह अकेला था और अब मिलियनेयर में है यह ख़ुदा तआला का काम नहीं है। यह सब कुछ किस प्रकार हुआ?

पत्रकार ने सवाल पूछा कि हुज़ूर यहां डेनमार्क आए हैं और आपका समुदाय यहां मस्जिद के बनाए जाने पर कुछ कार्यक्रम कर रहा है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मस्जिद के पच्चास वर्षो के पूरा होने के कारण मुझे यहां आने का प्लान नहीं था यद्यपि मुझे पता **था कि मस्जिद के निर्माण पर पच्चास वर्ष पूरे हो गए हैं लेकिन मेरे यहां आने का यह कारण नहीं है।**

***पत्रकार ने अर्ज़ किया कि कल HILTON होटल में जो RECEPTION समारोह हुआ है इसमें मिनिस्टर, संसद सदस्यों, एम्बसडर, रशिया और अमेरिका के प्रथम सैकर्टरीज़ और कुछ अन्य लोग आए थे। 150 के क़रीब मेहमान थे लेकिन इन मेहमानों में मेरे अलावा कोई अन्य पाकिस्तानी लोग नहीं थे इस प्रकार क्यों था।**

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया : यहां का स्थानीय प्रशासन इस का बेहतर जवाब दे सकती है। हमने पाकिस्तानी दूतावस को बुलाया और राजदूतों के लोगों को आमंत्रित किया। एम्बेसडर के बारे में पता चला कि वह उमरा करने जा रहे हैं और अन्यों के बारे में ज्ञान नहीं कि वह किस कारण से नहीं आ सके।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : यह हमारा सामान्य तरीका है कि जब हम हर साल लंदन में संगोष्ठी का आयोजन करते हैं तो कई पाकिस्तानी समुदाय के सदस्यों और भारतीय मूल के लोग आते हैं। अब हम नहीं जानते कि पाकिस्तानियों के साथ संबंध या तो इतने अच्छे नहीं हैं या वे हमारे कार्यक्रम में नहीं आना चाहते हैं, लेकिन मुझे इस बारे में पता नहीं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हम इस्लाम के वास्तविक संदेश को यहां स्थानीय डेनिश लोगों को पहुंचाना चाहते थे। मुझे लगता है कि यही कारण है कि उन्होंने शायद डेनिश लोगों को अधिक आमंत्रित किया है। यहां तक कि हमारे समुदाय के हमारे सदस्य भी बहुत कम थे। शायद दस पंद्रह लोगों की संख्या मौजूद थी।

पत्रकार ने पूछा: मैंने आप की जमाअत का अध्ययन किया है और आपकी जमाअत दुनिया भर में मिशनरी काम कर रही है। तो क्या आपने मिशनरी काम के बारे में कुछ ईसाई धर्म से लिया है और इस शब्द का इस्तेमाल किया है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि इसके लिए अंग्रेज़ी में कोई अन्य उचित शब्द है तो हम इसे अपना सकते हैं। हमारा काम तब्लीग़ करना है और इस्लाम का सन्देश पहुंचाना है। संस्थापक जमाअत अहमदिया ने यह घोषणा की थी कि मेरे आने के दो उद्देश्य हैं। एक कि हर व्यक्ति अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचाने, ख़ुदा तआला के करीब हो और दूसरा यह कि हर इंसान दूसरे इंसान के अधिकार अदा करे। एक दूसरे के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करे।

इन दो चीजों का पालन करके ही हम दुनिया में शांति सहनशीलता, भाईचारा और पारस्परिक प्रेम का वातावरण स्थापित कर सकते हैं। इसलिए हम इस संदेश को दुनिया को दे रहे हैं कि अपने निर्माता ख़ुदा तआला को पहचानें और इसका हक अदा करें और यह भी बात रहे हैं है कि तुम ख़ुदा तआला से कैसे निकट हो सकते हो? इसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाओं का पालन करो। कुरआन करीम के आदेशों का पालन करें। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चलो तो ये वे बातें हैं जिन का सन्देश हम पहुंचा रहे हैं। अत: जब हम कहते हैं कि हम मिशनरी काम कर रहे हैं, तो हमने कभी नहीं कहा कि हमारे साथ शामिल होने वालों को विभिन्न प्रकार की शिक्षाएं सिखा रहे हैं। हम कहते हैं कि यह कुरआन करीम की शिक्षा है और यह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। आपका कर्म है और आपके उपदेश हैं। इसलिए यदि आप परलोक में अपने जीवन को बचाना चाहते हो तो इन शिक्षाओं का पालन करते हुए हमारे साथ मिल जाओ।

पत्रकार ने कहा कि अहमदी मुसलमानों में यह नारा है कि मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी ने नहीं तो वह इस में शब्द भरोसे की वृद्धि क्यों नहीं करते क्योंकि नफरत और मुहब्बत विरोधाभास हैं, जबकि भरोसा इस प्रकार की चीज़ है जिस में बीच मिला जा सकता है।

इस सवाल का जवाब देते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यह एक नारा है जिसे कुरआन से लिया गया है। इसकी नींव कुरआन पर है। एक दूसरे से प्यार करो और एक दूसरे का सम्मान करो। एक दूसरे के साथ न्याय करो। अपने दुश्मन के साथ भी न्याय की पेशकश करो। जो लोग अपने लिए अच्छा है वही अपने भाई के लिए भी पसन्द करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हर जगह, हर स्थान पर मुहब्बत हर समय एक जैसा नहीं होती है। आप अपने बच्चे को एक अलग तरीके से प्यार करते हैं और अपने दोस्त को एक अलग तरीके से प्यार करते हैं। इसी तरह अपने बहन और भाई को विभिन्न तरीकों से प्यार करते हैं।

एक बार हजरत अली से उसके बेटों में से एक ने पूछा, क्या आप मुझ से प्यार करते हैं हज़रत अली ने उत्तर दिया हाँ मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तब बच्चे ने पूछा कि क्या आप ख़ुदा तआला से प्यार करते हैं। हज़रत अली ने उत्तर दिया, हाँ मैं अल्लाह तआला से प्यार करता हूँ। इस पर बच्चे ने कहा कि इन दोनों प्यार को एक ही स्थान पर कैसे एकत्र किया जा सकता है। इस पर हज़रत अली ने उत्तर दिया, जब ख़ुदा तआला का प्यार सामने आता है, तो मैं तुम्हारा प्यार छोड़ दूंगा और केवल ख़ुदा तआला से प्यार करूंगा। इसका मतलब है कि प्यार के विभिन्न स्तर हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि शत्रुओं से प्रेम उनके लिए सहानुभूति रखना है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो ख़ुद के लिए चाहो, अपने लिए पसंद करो वही दूसरों के लिए भी पसंद करो। तम यह चाहो कि तुम से सहानुभूति की जाए फिर दूसरों के लिए अपने दिल में दूसरों की सहानुभूति की भावना रखो।

अत: हमारे लिए इस माटो मुहब्बत सब से नफरत किसी से नहीं कुरआन की शिक्षाओं पर आधारित है।

*एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया : मैं एक समय से बता रहा हूं कि अगर हम ने इंसाफ से काम न लिया और बड़ी शक्तियों ने ग़रीब देशों के अधिकार न दिए और ग़रीब देशों की दौलत लूटनी बंद न की तो फिर आप को विश्वास होना चाहिए कि जंग आप के दरवाज़ा पर है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : पुस्तक पाथ वे टू पीस पढ़ें इसमें सम्बोधन के अलावा वे पत्र भी हैं जो बड़ी शक्तियों के प्रमुखों के नाम लिखे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : मैंने लास एंजिलिस (अमेरिका) में राजनेताओं और पढ़े लिखे लोगों के सामने सम्बोधन किया था और बताया था कि न्याय से काम लें और सावधानी करें अन्यथा हम तीसरे विश्व युद्ध को रोक नहीं सकते। इस पर, एक राजनेता ने बारे में हमारे सदस्यों से कहा कि बड़े PESSIMIDTIC हैं। अब उन्होंने हमारे आदमियों को यह संदेश दिया है कि ख़लीफा ने सच कहा कि उसने यहां क्या कहा था। अब हम इन स्थितियों के निशानों को देख रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : जो कौमें अपने पैदा करने वाले की तरफ नहीं झुकेंगी और अपने पैदा करने वाले के अधिकार अदा नहीं करेंगी और लोगों से इंसाफ नहीं करेंगी और लोगों के अधिकारों को अदा नहीं करेंगी तो वे सब ख़ुदा तआला की पकड़ मैं आएंगी।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : पहली 1932 ई में, आर्थिक संकट आया था। 2008 ई में आर्थिक संकट आया है करोड़ों लोग बेरोज़गार हैं। इस आर्थिक संकट के बाद आतंकवाद में वृद्धि हुई है। इसका लाभ आतंकवादी संगठनों ने उठाया और हालात भ्रष्टाचार की ओर बढ़ गए हैं। और इस संकट का नतीजा दुनिया की शांति है। ये सभी इस प्रकार की चीजें हैं जो युद्ध की तरफ ले जा रही हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यदि जीवित तीसरी जंग से बचना है तो यह एकमात्र समाधान है कि अपने निर्माता की तरफ लौटो, और उसके अधिकारों को अदा करो। और एक-दूसरे से सहानुभूति तथा सम्मान से व्यवहार करो। यदि इस प्रकार नहीं करोगे तो बचोगे।

*** पत्रकार ने पूछा कि क्या कारण है कि आप महिलाओं से हाथ नहीं मिलाते।?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हम इस्लाम की सच्ची और सही शिक्षाओं पर अनुसरण करते हुए महिलाओं के

सम्मान में उन से हाथ नहीं मिलाते। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महिलाओं के सम्मान में हाथ मिलाने से मना किया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :विभिन्न देशों, जनजातियों की अपनी-अपनी रिवायतें होती हैं। हिंदू मिलते हुए अपने हाथों को जोड़ते हैं। जापानी मिलते हुए अपने सिर को झुकाते हैं। अफ्रीका में कुछ जनजातियों के बादशाहत इस तरह के होते हैं कि वे अलग खाना खाते हैं। चाहे किसी देश के सदर क्यों न हो उन्होंने अपना खाना अकेले में खाना होता है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैं किसी अन्य से अधिक औरतों का सम्मान करता हूं।

*** पत्रकार ने सवाल किया। यहां नमाज़ों में समारोहों में महिलाएं अलग-अलग क्यों बैठती हैं?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "अलहयाओ मिनल ईमान" शर्म ईमान का हिस्सा है। पहले इसी प्रकार से होता था। जब मस्जिद में अलग स्थान पर नहीं था, तो पुरुष आगे नमाज पढ़ते थे और महिलाएं ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ती थीं। फिर इस तरह होता है कि मस्जिद के एक हाल में भी है एक हिस्सा में पुरुष नमाज़ पढ़ते हैं और बीच में स्क्रीन लगा कर दूसरी तरफ औरतें नमाज़ पढ़ती हैं। अब जहां अलग हाल हैं, वहां दोनों के अलग अलग हाल हैं।

अब यहां महिलाओं का हॉल निचले भवन में है और मस्जिद के नीचे है। पुरुष इस समय अधिक हैं, इसलिए निचले वाला हॉल भी पुरुषों को ही दिया गया है। यह फ्लो के कारण है। और महिलाओं को मस्जिद के सामने दूसरी इमारत में एक बड़ा हॉल दिया गया है। यदि पुरुष और अधिक हो जाएं तो वे मार्की में नमाज़ पढ़ते हैं और महिलाएं हॉल में आती हैं।

पत्रकार ने आखरी सवाल किया कि महिलाओं के एक समूह ने एक मस्जिद बनाई है और इस का नाम मर्यम मस्जिद रखा है दिया है और वहां तीन महिलाएं इमाम हैं। क्या यह आपके निकट स्वीकार्य है?

हुज़ूर अनवर ने फरमाया यूट्यूब या व्हाट्सएप पर यह वीडियो मौजूद है जहां महिला इमामत करवा रही है। और पुरुष और महिलाएं एक साथ खड़े नमाज़े पढ़ रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया क्या आप अपना धर्म बनाएंगे या आप अगर मुसलमान हैं तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म पर चलेंगे। जो कुछ भी हम कुरआन मजीद में लिखा हुआ है, हम इसका अनुसरण करेंगे। और जैसा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अनुकरण कर के दिखाया है हम उस का अनुसरण करेगें

जो कुछ यह लोग कर रहे हैं इस ज़माने के लोगों को ख़ुश करने के लिए कर रहे हैं और जो ग़ैर-मुसलमानों की तरफ से आरोप होते हैं उन से बचने के लिए करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : शरीयत के हर मामला में शरीयत का पालन आवश्यक है। और नमाज़ अदा करने के मामले में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कर दिखाया और जो उपदेश फरमाए उनकी पाबन्दी अनिवार्य है। यदि कोई व्यक्ति एक सच्चा और वास्तविक मुसलमान है तो वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों की ही पालन करेगा।

यह इनट्रवियू 11:00 बजे समाप्त हुआ।

पारिवारिक मुलाकात

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार पारिवारिक मुलाकातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सत्र में, 10 परिवारों के 31 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चे तथा बच्चियों चाकलेट प्रदान कीं। इन सभी परिवारों के हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

ख़िलाफत राश्दा की विशेषताएं

ख़िलाफते राशदा इस्लामी तारीख़ का वह सुनहरी दौर है जो एक रोशनी के मीनार का काम देती है जिसकी तरफ बाद के सारे दौरों में फुक्हा तथा मुहदसीन और साधारण धार्मिक और मुहदसीन हमेशा देखते रहे और इसको इस्लाम के मज़हबी सियासी इख़लाकी और इजतमाई निज़ाम के मामला में स्तर समझते रहे। यह दौर ज़ाहिर में 30 साल के मामूली अरसा तक जारी रहा मगर इन तीस सालों का मुकाबला इस्लामी तारीख़ का कोई दौर नहीं कर सकता। इसी दौर में इस्लाम की पूरी व्यावहारिक तस्वीर हमें नज़र आती है। आइए देखें के ख़िलाफत राशदा किन बातों की वजह से इस्लामी तारीख़ का सुनहरी दौर कहलाता है।

ख़िलाफत का चुनाव

चारों ख़ुल्फा की सीरत का अध्ययन करने और इस्लामी तारीख़ का जायज़ा लेने से यह बात साबित हो जाती है के इन ख़ुल्फा कराम ने ख़ुद ख़लीफा बनने की इच्छा नहीं की बल्कि मुसलमानों ने आप से मशवरा के बाद अपने में से बेहतरीन वजूद का चुनाव बतौर ख़लीफा के किया।

नबी के जानशीनी के लिए हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह अन्हो को हज़रत उमर फारूक रज़ि अल्लाह अन्हो ने सकीफा बनु सअदा ही में तजवीज़ किया और मदीने के सारे लोगों ने बिना इख़तेलाफ किसी दबाव और लालच के इस चुनाव को कबूल किया और हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह अन्हो के हाथ पर बैअत की।

हज़रत अबू बकर ने अपनी वफात के समय हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो के हक में वसीयत लिखवाई और फिर मस्जिद नब्वी में लोगों को जमा करके कहा :

"क्या तुम इस व्यक्ति पर राज़ी हो जिसे में अपना जानशीन बना रहा हूँ। ख़ुदा की कसम मैंने राय कायम करने के लिए अपने ज़ेहन में ज़ोर डालने में कोई कमी नहीं की और अपने किसी रिश्तेदार को नहीं बल्कि उमर रज़ि अल्लाह अन्हो बिन अलख़त्ताब को जानशीन बनाया है अत: तुम उसकी सुनो और उसकी आज्ञा पालन करो। इस पर लोगों ने कहा "हम सुनेंगे और आज्ञा पालन करेंगे।"

(तिबरी , तारीख़ुल उमुम वाली अलमलूक जिल्द 2 सफा 612)

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने अपनी मौत के समय ख़िलाफत का फैसला करने के लिये एक चुनावी मज्लिस कायम की जिसके सदस्यों में से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अवफ ने लोगों के मशवरा और रुहजान का जायज़ा लेकर हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो को ख़लीफा कायम किया।

हज़रत उस्मान की शहादत के बाद जब कुछ लोगों ने हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो को ख़लीफा बनाना चाहा तो उन्होंने कहा। तुम्हें ऐसा करने का हक नहीं है। ये तो अहले शूरा और अहले बदर का काम है। जिसको अहले शूरा और अहले बदर ख़लीफा बनाना चाहेंगे वही ख़लीफा होगा। तिबरी की रिवायत में हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो के शब्द यह हैं :

" मेरी बैअत छुपे तरीके से नहीं हो सकती यह मुसलमानों की मर्ज़ी से होनी चाहिए।"

(तिबरी जिल्द 3 सफा 450)

इन घटनाओं से साफ ज़ाहिर है कि ख़िलाफत को वे मुसलमानों की आपस के मशवरा और आज़दाना रज़ामन्दी से कायम करते थे। विरसा में या ताकत से हुकूमत में आने वाली इमारत उनकी राय में ख़िलाफत नहीं बल्कि बादशाही थी। हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाह अन्हो के ये शब्द ध्यान देने योग्य हैं:

"ان الامارة ما اوتمر فيها وان الملك غلب عليه بالسيف"

अनुवाद : इमारत (अर्थात ख़िलाफत) वह है जिसे कायम करने में मश्वरा किया गया हो और बादशाही वह है जिस पर तलवार के ज़ोर से ग़लबा हासिल किया गया हो।"

(कनज़ुल उम्माल जिल्द 5 सफा 2281)

बादशाहत नहीं ख़िलाफत

यूनान और रूम की तारीख़ एक मुख़तसिर ज़माना के छोड़ कर पुराने ज़माने से लेकर इंकलाब फ्रांस(1789 इ०) तक दुनिया का वाहिद निज़ाम हुकुमत मलुकियत अर्थात बादशाहत रहा। ख़िलाफते राश्दा के ज़माना में भी दुनिया के हर मुल्क में बादशाहत जारी थी मगर ख़िलाफते राश्दा का सियासी निज़ाम इन सबसे बढ़कर था और बादशाहत से उसका दूर तक कोई रिश्ता व सम्बन्ध ना था। ख़िलाफते राश्दा में जो सियासी निज़ाम जारी था उसे आजकल के मग़रबी मुफकरीन जमहूरी निज़ाम ख़्याल नहीं करते क्योंकि उनके ख़्याल में इसमें हाकमियत और आला इक्तदार लोगों को हासिल न थे मगर अपनी रूह के ऐतबार से ख़िलाफते राशदा हर दौर की

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 23 August 2018 Issue No. 34

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

जम्हूरियत से बढ़कर जमहूरी है क्योंकी इस निज़ाम में हाकमियत सिर्फ अल्लाह की समझी जाती थी। अल्लाह और रसूल के बाद सारे हुकूक लोगों को हासिल थे और किताब और सुन्नत के रहनुमा असूलों के दायरे में मुकम्मल अधिकार रखते थे। अल्लाह की हाकमियत ने ख़िलाफते राशदा को ज़ुल्म तथा नाइंसाफी से महफूज़ कर दिया। यह निज़ाम यद्यपि 30 साल के थोड़े समय तक जारी रहा मगर यह तारीख़ इंसानी का सुनहरी दौर है। इस निज़ाम में जहाँ एक तरफ अल्लाह की हाकीयमत का तसव्वुर था वहाँ इसमें जमहूरियत की रूह भी मौजूद थी। ख़िलाफत राश्दा की नीचे लिखी विशेषताएं इसे जमहूरी रूह प्रदान करती हैं।

मशावरती निज़ाम

जमहूरियत की रूह आज़ादी राय है और यह रूह ख़िलाफत राश्दा में पूरी तरह मौजूद थी ख़लीफा को रियासत के उच्च अधिकारी की हैसियत से इख़तियार थे मगर वह दो बातों का पाबन्द था। एक इस्लामी शरीयत का पाबन्द दूसरे अहले राये से मशवरा लेता। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो का कहना है لَا خِلَافَةَ اِلَّا عَنِ الْمَشُوَرَةِ। अर्थात ख़िलाफत मशवरा के बिना नहीं है। हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो पर सारे ख़ुल्फा कराम में से सबसे अधिक आरोप लगाए गए और आलोचना हुई मगर कभी भी आप रज़ि अल्लाह अन्हो ने ज़बरदस्ती लोगों के मुँह बन्द ना किए बल्कि सब लोगों के सामने सफाई दी।

बैतुल माल के अमानत होने का ख़्याल

जमहूरी निज़ाम में एक ख़ूबी यह है कि लोगों के सलूक से हुकुमत टलती है और लोग सरकार चलाने के लिए टेक्स की शक्ल में रूपया देते हैं मगर इस तरीका में कमी यह रहती है के जिन लोगों को चुन कर सरकार चलाने की जिम्मेदारी दी जाती है प्राय वही ख़यानत करने वाले हो जाते हैं और सरकारी माल में ख़यानत करते हैं।

प्यारे पाठको ! ख़िलाफत राश्दा हमें ख़तरनाक बीमारी से हमें पाक तथा साफ नज़र आती है। बैतुल माल को ख़ुल्फाये कराम ख़ुदा और ख़ल्क की अमानत ख़्याल करते थे और इस बात को जायज़ ना समझते थे कि बैतुल माल से अपने लिए ना-जायज़ रूपया हासिल करें। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने एक बार हज़रत सल्मान फारसी रज़ि अल्लाह अन्हो से पूछा के "मैं बादशाह हूँ या ख़लीफा?"

उन्होंने बढ़े ध्यान से जवाब दिया कि "अगर आप मुसलमान की ज़मीन से एक दिरहम भी हक के ख़िलाफ वसूल करें और उसको हक के ख़िलाफ ख़र्च करें तो आप बादशाह हैं न के ख़लीफा।"

एक और अवसर पर हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने अपनी मज्लिस में कहा "ख़ुदा की कसम मैं अभी तक यह नहीं समझ सका कि मैं बादशाह हूँ कि ख़लीफा। अगर में बादशाह हो गया हूँ तो यह बड़ी सख्त बात है।"

इस पर किसी ने कहा हे अमीरूल मोमेनीन इन दोनों में बड़ा फर्क है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने पूछा वह क्या है। उन्होंने कहा ख़लीफा कुछ नहीं लेता मगर हक के मुताबिक और कुछ खर्च नहीं करता मगर हक के मुताबिक। आप ख़ुदा के फज़ल से ऐसे ही हैं। रहा बादशाह तो वह लोगों पर ज़ुल्म करता है एक लोगों से व्यर्थ में लेते और दूसरे को व्यर्थ में देता है।

(तबकात इब्ने साद जिल्द 3 सफा 306 - 307)

ख़िलाफते राश्दा में पाक निज़ामे हकुमत हुकुमत का ख़ुदाई तसव्वुर और सामाजिक न्याय। फतूहात में जिहाद की इस्लामी रूह स्पष्ट नज़र आती है। ये वे बातें हैं जिनकी वजह से इस्लामी ख़िलाफत राश्दा तारीख़े इस्लाम के हर दौर से मुमताज़ तथा अव्वल है बल्कि सच यह है कि देश के इंतज़ाम सियासत और समाज के सुधार के मैदान में इन तीस सालों में जो कारनामे अंजाम दिए गए वह न सिर्फ इस्लामी तारीख़ में बल्कि संसार की तारीख़ में मील के पत्थर की हैसीयत रखते हैं और ख़िलाफते राश्दा का दौर अपने सकारात्मक और ठोस कारनामों और विशेष विशेषताओं की वजह से आने वाली नस्लों के लिए एक मिसाली और अनुकरण योग्य नमूना बन गया है और आज भी इस्लामी दुनिया में इसकी यह हैसीयत कायम है।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

जमाअत के लोग

इन दुआओं को बहुत अधिक पढ़ें।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्दहुल्लाह तआला बेनस्लेहिल अज़ीज़ ने जलसा सालाना लंदन के पहले दिन 3 अगस्त 2018 को अपने उद्घाटन ख़िताब नें जमाअत के लोगों को बहुत अधिक दरूद शरीफ पढ़ने और नीचे लिखी दुआएं पढने की तहरीक फरमाई।

(1) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अनुवाद:: हे हमारे अल्लाह! तू मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आल (सन्तान) पर दरूद भेज जिस प्रकार तूने इब्राहीम पर और उस की आल पर दरूद भेजा। तू मुहम्मद और मुहम्मद की आल को बरकत प्रदान कर जिस प्रकार तूने इब्राहीम तथा इब्राहीम की आल को बरकत प्रदान की। तू बहुत अधिक सम्मान वाला तथा बुज़ुर्गी वाला है।

(2) رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ

(आले इम्रान 9)

अनुवाद:: हे हमारे रब्ब हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे इस के बाद कि तूने हमें हिदायत दे दी और हमें अपनी तरफ से रहमत प्रदान कर। निसन्देह तू ही बहुत अधिक प्रदान करने वाला है।

(3) رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

(आले इम्रान 148)

अनुवाद:: हे हमारे रब्ब हमारे गुनाह क्षमा कर दे और अपने मामला में हमारी ज़्यादती भी। और हमारे कदमों को मज़बूती प्रदान कर और हमें काफिर क़ौमों के विरुद्ध सहायता प्रदान कर।

(4) رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۖ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

(अल्आराफ 24)

अनुवाद::हे हमारे रब्ब हम ने अपनी जानों पर अत्याचार किया और अगर तूने हमें माफ न किया और हम पर रहम न किया तो हम निसन्देह घाटा पाने वालों में से हो जाऐंगे।

(5) رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(अल्बकर: 202)

अनुवाद:: हे हमारे रब्ब हमें दुनिया में भी अच्छाई प्रदान कर और आख़रत में भी अच्छाई प्रदान कर और हमें आग के आज़ाब से बचा।

(6) اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

(अबू दाऊद किताबुल फज़ाइल)

अनुवाद:: हे अल्लाह हम तुझे उन के सीनों में करते हैं(अर्थात तेरा रौब तथा ख़ौफ उन के सीनों में भर जाए) और उन की बुराइयों से तेरी पनाह मांगते हैं।

(7) رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ

(इल्हामी दुआ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम)

अनुवाद:: हे मेरे रब्ब हर एक चीज़ तेरी सेवक है। हे मेरे रब्ब! शरारत करने वाले की शरारत से मेरी सुरक्षा कर और मेरी सहायता कर और मुझ पर रहम कर।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad